दिसम्बर-२०२१ ◆ वर्ष १० ◆ अंक ०८ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

दिसम्बर-२०२१

ऐसी रचना बुद्धि चमत्कृत, रूप असाधारण हैं ये तो।
ईश्वर-भिन्न न इनका कर्त्ता, किया प्रमाणित ऋषि ने ये तो॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१० १२२

स्वाद की दौड़ में, सबसे आगे

MDH
मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच

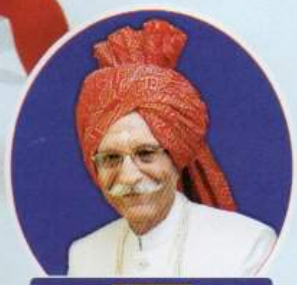

पद्मभूषण
महाशय धर्मपाल जी
संस्थापक चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

समाचार २८	०४	वेद सुधा
	११	सत्यार्थप्रकाश पहेली- १०/२१
	१२	कौन रक्षा करेगा?
	१४	स्वामी श्रद्धानन्द
	१६	ईसाईयों द्वारा धर्मान्तरण .....
	१८	सावरकर पर हमला क्यों?
हलचल २१	२०	वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
	२४	एक शिक्षाप्रद पत्र-पुत्र के नाम
	२५	अदरक- स्वाद से सेहत तक
	२६	अमर शहीद ये चार लाड़ले
	३०	सत्यार्थ पीयूष- वेद ज्ञान की .....

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक
भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२१
मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी
विक्रम संवत् २०७८
दयानन्दाब्द १९७

December - 2021

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १० | अंक - ०८

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

य आत्मदा बलदा यस्य विश्वऽउपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। - यजुर्वेद २५/१३

अर्थ- (**यः**) जो (**आत्मदाः**) आत्मज्ञान का दाता (**बलदाः**) शरीर, आत्मा और समाज के बल का देने हारा (**यस्य**) जिसकी (**विश्वे**) सब (**देवाः**) विद्वान् लोग (**उपासते**) उपासना करते हैं और (**यस्य**) जिसका (**प्रशिषम्**) प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं (**यस्य**) जिसका (**छाया**) आश्रय ही (**अमृतम्**) मोक्षसुखदायक है (**यस्य**) जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही (**मृत्युः**) मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस (**कस्मै**) सुखस्वरूप (**देवाय**) सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए (**हविषा**) आत्मा और अन्तःकरण से (**विधेम**) भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

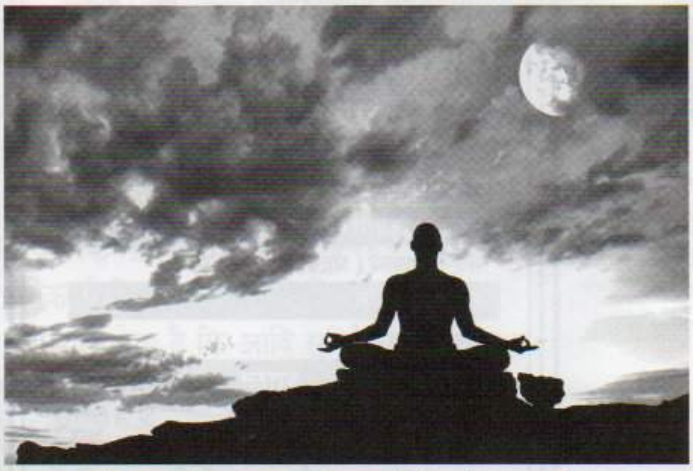

विज्ञान-

जीव का जो स्वाभाविक ज्ञान है, वह साधन कोटि में है। यह स्वाभाविक ज्ञान वेद और आप्त विद्वानों की शिक्षा ग्रहण करने में साधन मात्र है तथा पशुओं के समान व्यवहार का भी साधन है। परन्तु वह स्वाभाविक ज्ञान धर्म-अर्थ-काम और मोक्षविद्या का साधन स्वतन्त्रता से कभी नहीं हो सकता। **एतदर्थ प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना और उपासना करनी आवश्यक है**। यम-नियम का सेवन कर, प्राणायाम से चित्त-वृत्ति निरोध में सब विद्याओं से युक्त परमेश्वर है, उसके बीच में अपने मन को ठीक-ठीक युक्त करते हैं तथा अपनी बुद्धि-वृत्ति अर्थात् अपने ज्ञान को भी उस परमेश्वर में ही स्थिर करते हैं। तब वह परमेश्वर अपनी कृपा से अपना आत्मा दे देता है; अर्थात् जीवस्थ होकर अन्तर्यामी रूप से जीव में अपना विद्या-विज्ञान दे देता है; यही **आत्मदाः** का अर्थ है। इस स्थिति में जीव को वह आत्मस्वरूप होकर अपना शरीर बना लेता है। '**आत्मदाः**' अर्थात् आत्मज्ञान का देनेहारा है- विद्याविज्ञानादि होने के कारण। आत्मज्ञान से अभिप्राय- आत्मा और परमात्मा दोनों का ज्ञान होने से है। इसी से सब सत्यविद्या और सत्यसुखों की प्राप्ति होती है।

(**बलदाः**) शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा- उस उपासक को यह त्रिविधबल प्रदान करता है। शरीरबल=दृढाङ्गता, महापुष्टि और वीर्यादि की वृद्धि, आत्मा का बल=आत्मा और परमात्मा के ज्ञान से युक्त, सब विद्याओं को जानने वाला, छल-कपटादि दोषों से रहित धर्मात्मा, सत्यवादी, सत्यमानी और सत्यकारी ईश्वर की कृपा से जैसा पूर्ण विद्या से आत्मा में ज्ञान है, उसको ईश्वरेच्छा की प्रेरणा से मनुष्यों पर कृपादृष्टि से सत्योपदेश में निर्भयता, निःशङ्कता होना ही आत्मबल है। इस आत्मा के बल से युक्त जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करने में अत्यन्त उत्साह और आनन्द समझना; क्योंकि ईश्वराज्ञापालन ही मुख्य प्रयोजन है। इसी में सब जीवों का कल्याण है। ऐसा करने में समाज का बल प्राप्त होता है। यह ईश्वर की कृपा से तीनों बलों की प्राप्ति होती है। इसी ईश्वरीय शक्ति से मानस विज्ञानबल, इन्द्रियबल और श्रोत्रादि की स्वस्थता, निर्भयता परमेश्वर के अखण्ड असीम साम्राज्य में विचरना ही सामाजिक बल है।

"जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं" अर्थात् मूर्ख, अविद्वान् ही उस ईश्वर की उपासना नहीं करते। ईश्वर की उपासना से धर्माचरणपूर्वक मूर्खत्वादि दोष छूटकर ज्ञानी बन जाता है।

"जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं।"

प्रश्न- कौन मानते हैं? तो **उत्तर** यह है कि- विद्वान् लोग मानते हैं।

प्रश्न- क्या मानते हैं? **उत्तर**- प्रत्यक्ष स्वरूप शासन।

प्रश्न- क्यों? **उत्तर**- जैसा स्वतंत्रता से जीव करता है वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है, और जैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है। ईश्वर का अनादि ज्ञान होने से जैसा कर्म ज्ञान है, वैसा ही दण्ड ज्ञान अनादि है, दोनों ज्ञान उसके सत्य ही हैं।

यही प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन विद्वानों द्वारा अनुशासन माना जाता है। यही विद्वानों या शिष्टजनों द्वारा जो अनुशासन अत्यन्त मान से स्वीकार किया जाता है, वही वेदोक्त शिक्षा अर्थात् असंख्य जीव व्यक्तियों में सुख-दुःख के अपरिसंख्येय भेद के प्रत्यक्ष होने के कारण ईश्वर का न्याय कहा जाता है। **न्याय के प्रत्यक्ष होने के कारण शिक्षा यह है कि हम लाग सीधे-सरल स्वभाव से निश्छल, निष्कपट होकर सदा धर्माचरण में ही प्रवृत्त रहें, अधर्माचरण में कदापि नहीं।** ऋषि के लिखित अर्थ का दूसरा आशय यह भी है कि- सब प्राणी और अप्राणी, जड़-चेतन, विद्वान् और मूर्ख उस परमात्मा के नियमों का कोई कभी उल्लङ्घन नहीं कर सकता। जैसे कि कान से सुनना, आँख से देखना; इसको कोई उलटा नहीं कर सकता। अर्थात् उसके न्याय अर्थात् शिक्षा से सीख लेकर ईश्वर का प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन मानने में अत्यन्त लाभ है।

''**यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः** - जिसका आश्रय ही मोक्ष सुखदायक है, जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है।''

इस अर्थ को समझने के लिए हमें अन्वय-व्यतिरेक अलङ्कार को समझना आवश्यक है। इस अन्वय और व्यतिरेक का क्षेत्र बहुत व्यापक है। जिसके होने से जो हो और न होने से न हो, वह अन्वय-व्यतिरेक होता है। जैसे दीप और सूर्यादि के होने से प्रकाशादि का होना और न होने से प्रकाशादि का न होना। उसी प्रकार जिस ईश्वर की छाया= छादन= आश्रय= आलम्बन ही मोक्ष सुखदायक है और जिसका अच्छाया= अनाश्रय मृत्यु आदि दुःख का हेतु है। यह अन्वय- व्यतिरेक का कमाल है। नहीं तो जिसकी छाया ही अमृत= मोक्ष है और जिसकी छाया ही मृत्यु है, यह अर्थ हो जाता; जो असम्भव दोष से दूषित होता। कारण यह है कि '**यस्य छाया**' के साथ **अमृत** शब्द पठित है, परन्तु दूसरे '**यस्य**' के साथ '**मृत्यु**' शब्द विद्यमान है, जो अमृत के विपरीत है और विपरीत अर्थ का द्योतक है। अतः '**यस्य छाया**' अर्थात् जिसका आश्रय अमृत= मोक्ष है, तो '**यस्य अच्छाया**' अर्थात् आश्रय न लेना या जिसका न मानना ही मृत्यु आदि दुःख का कारण है।

अगर हम थोड़ा-सा व्यापक अर्थ में जाएं तो छाया को आश्रय अर्थात् कृपा और अच्छाया को अनाश्रय= अकृपा कह सकते हैं। क्योंकि मृत्यु होती ही जन्म के लिए है। दुःख होता ही जन्म से है। दुःख है तो जन्म से, जन्म होता है प्रवृत्ति से, प्रवृत्ति होती है दोष से और दोष मिथ्याज्ञान से होता है। ईश्वर की कृपा से यानी= छाया आश्रय से मिथ्याज्ञान जो दोष का कारण है, वह हटता है। उसके हट जाने से दोष हट जाता है। कारण निवृत्ति से कार्य निवृत्ति होने के सिद्धान्त से। दोष के हटने से प्रवृत्ति हटी; क्योंकि दोषों का प्रवृत्ति में कारण है। प्रवृत्ति हटी तो जन्म हटा; क्योंकि प्रवृत्ति ही जन्म का कारण है। जन्म के हटने से दुःख हटा; क्योंकि जन्म ही शरीर सम्बन्ध है और शरीर सम्बन्ध के बिना दुःख का होना असम्भव है। क्योंकि जन्म का दुःख मूलत्व है। दुःख के अपाय होने पर अपवर्ग= मोक्ष निश्चित है, जो ईश्वर की कृपा ही है। उस ईश्वर की भक्ति न करना अर्थात् न मानना ही अच्छाया अर्थात् मृत्यु आदि दुःख का हेतु है। इसको यों भी कह सकते हैं कि- उसको न मानना या भक्ति न करने का अर्थ यह है कि सत्यविद्या, सत्यधर्म और सत्यमोक्ष है, उसको न मानना और वेदविरुद्ध कपोल-कल्पना अर्थात् दुष्ट इच्छा से बुरे कामों में वर्तता है, उस पर ईश्वर की अकृपा होती है।

इसलिए ''**कस्मै देवाय हविषा विधेम**'' उस सुखस्वरूप सकलज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् उसकी आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

आत्मा और अन्तःकरण से तात्पर्य आत्मा= जीव, अन्तःकरण= मन, बुद्धि चित्त और अहङ्कार प्राणादि सब सामर्थ्य से है। भक्ति अर्थात् उसकी आज्ञा पालन अर्थात् सेवक और स्वामी का सम्बन्ध स्थापित करना। जैसे- स्वामी की आज्ञा की वाट सेवक देखता है, और उसके पालन में तत्क्षण तत्पर हो जाता है, वैसे ही सेवक बनकर सदा उसकी आज्ञा की वाट जोहता रहे। भक्ति से तात्पर्य यह भी है कि- उस एक ईश्वर को छोड़कर किसी अन्य को ईश्वर न मानना। क्योंकि ईश्वर दूसरा है ही नहीं। एक ईश्वर की आज्ञा पालन में तत्पर रहना '**भक्ति**'; अनेक ईश्वर को मानना '**विभक्ति**' कहलाती है। भक्ति में ईश्वर एक है और विभक्ति में ईश्वर का अनेकत्व। जो कि संसार में परस्पर ईर्ष्या, द्रोह, कलह, अशान्ति और अनेक मत, पन्थ, मज़हब तथा सम्प्रदायों के होने में हेतु है।

अभिप्राय यह हुआ कि बारम्बार मरण और जन्मरूप महाक्लेशदायक है। वही एक परमसुखदायक पिता है। आओ, अपने लोग सब मिल के प्रेम, विश्वास से उसकी भक्ति करें। कभी उसको न छोड़के अन्य को उपास्य न मानें, वह अपने को अत्यन्त सुख देगा; इनमें कुछ भी सन्देह नहीं।

- आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
२४३, अरावली अपार्टमेन्ट, अलखनन्दा, नई दिल्ली

साभार- उपासना-विज्ञान

□□□

आत्म निवेदन

सावरकर वीर अथवा कायर?

अभी पिछले दिनों प्रसिद्ध पत्रकार उदय माहुरकर की पुस्तक 'वीर सावरकर' के विमोचन के कार्यक्रम में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने यह क्या कह दिया कि सावरकर को दया याचिका लगाने की सलाह महात्मा गाँधी ने दी थी, देश में तूफान उठ खड़ा हुआ और तर्कों-कुतर्कों की बरसात होने लगी।

हम इस बात को महत्वहीन मानते हैं कि सावरकर ने स्वयं अपने चिन्तन के फलस्वरूप हिताहित को समझते हुए इन याचिकाओं को प्रेषित किया अथवा महात्मा गाँधी के कहने पर किया। विचार यह करना होगा कि सावरकर जैसे जीवट वाले व्यक्ति ने यह दया याचिकाएँ लगाई ही क्यों? और **उससे भी महत्वपूर्ण इस प्रश्न पर विचार करना पड़ेगा कि इन याचिकाओं को अंग्रेजों ने स्वीकार क्यों नहीं किया?** अगर निष्पक्ष होकर के इनके उत्तर ढूढेंगे तो सावरकर जी पर लगाए गए हर आक्षेप का निराकरण हो जाएगा, ऐसा मेरा मानना है और इसी कारण यह आलेख पाठकों के समक्ष है।

किसी भी व्यक्ति अथवा घटना के बारे में लोग प्रायः अपने पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर सोचते हैं। इसके सबसे बड़े उदाहरण वीर सावरकर हैं। एक ओर जबकि उन्हें कायर और भगोड़ा कहने में, यहाँ तक कि गद्दार कहने में किसी को संकोच नहीं होता तो दूसरी ओर उन लोगों की कमी नहीं है जो सावरकर के जीवन को एक आदर्श का जनक मानते हैं। यह लिखते समय मुझे सावरकर जी के शब्द ही स्मरण हो रहे हैं जो उनके द्वारा लिखित पुस्तक के आंग्ल अनुवाद My transportation for life में लिखे हैं। सन्दर्भ तब का था जब हेग न्यायालय ने सावरकर को कोई रियायत देने से इनकार कर दिया था तब जहाँ मुम्बई के एंग्लो इन्डियन अखबार लिख रहे थे- 'The rascal has at last met with his fate.'

तो वहीं यूरोप के अखबार उन्हें 'शहीद' का दर्जा दे रहे थे। संसद के सेन्ट्रल हॉल में जब वीर सावरकर जी का चित्र लगाने की बात थी अथवा उन्हें भारत रत्न दिए जाने का प्रश्न था, ठीक वैसी ही परिस्थिति हमें देखने को मिली।

'लोग क्या कहेंगे ?' यह प्रश्न कभी-कभी और अगर सच कहूँ तो अक्सर इतना बड़ा बन जाता है कि व्यक्ति यह जानते हुए कि परिवार के लिए, राष्ट्र के लिए, समाज के लिए, इनके संरक्षण अथवा उत्थान के लिए, क्या करणीय कर्तव्य है, केवल यह सोच कर कि लोग क्या कहेंगे, वह इस कर्तव्य से विरत रह जाता है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण महाभारत के भीष्म हैं। भीष्म भली-भाँति जानते थे कि दशरथ ने वृद्धावस्था में कामासक्त होकर विवाह करने की जो गलती की, उसकी परिणति श्रीराम के १४ वर्ष के वनवास में हुयी, और ऐसा ही कुछ उनकी जीवन भर अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा के कारण हो सकता है। परन्तु पिता की आज्ञा को सर्वोपरि मान उन्होंने भीष्म प्रतिज्ञा की और सारी जिन्दगी इस प्रतिज्ञा के बन्धन में बँधे रहे। कौरव कुल में अधर्म इस हद तक पोषित हो रहा था कि भरे दरबार में स्वयं कुलवधू को, जबकि वह एक वस्त्र और रजस्वला की स्थिति में थी, अपमानित किया जा रहा था, उसे भरे दरबार में निर्वस्त्र करने की मंशा प्रकट की जा रही थी। जिस स्थिति में धरती फट

सकती थी, भीष्म निष्क्रिय बने रहे। हमारा कहना है कि उस समय क्या भीष्म के मन में यह नहीं आया होगा कि अधर्म को रोकना चाहिए और विशेष रूप से तब जब मैं इसे रोकने में सर्वथा सक्षम हूँ, परन्तु वह इससे क्यों विरत रहे? इसलिए कि 'लोग क्या कहेंगे' कि भीष्म ने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी। लोकमत के इस अनियंत्रित दबाव ने हमारी राय में महाभारत जैसा विनाशकारी युद्ध प्रवर्तित कर दिया। अगर भीष्म उसी समय या उससे भी पूर्व जब-जब अन्याय की स्थितियाँ आई थीं, तब राज्य और परिवार को अपने नियंत्रण में ले लेते तो निश्चित रूप से वह विनाशकारी युद्ध, जिसने भारतवर्ष की दशा और दिशा बदल दी, नहीं होता। स्पष्ट है कि भीष्म ने व्यक्तिगत प्रतिष्ठा पर राष्ट्रहित को बलिदान कर दिया। ऐसे अनेकानेक उदाहरण दिए जा सकते हैं।

निश्चित रूप से वीर सावरकर ने जब अपनी सजा मुक्ति की पहली याचिका लिखी होगी तो उनके मन में भी अवश्य उठा होगा कि 'लोग क्या कहेंगे?' उनके सामने दो विकल्प थे या तो ५० वर्षों तक काल कोठरी में रहते हुए, विकट अत्याचारों को सहते हुए, जीवन समाप्ति की प्रतीक्षा करें और इस प्रकार राष्ट्र को स्वतंत्र कराने का, उसकी समृद्धि के लिए कार्य करने का उनका जो सपना है उस पर पूर्ण विराम लगा दें, और लोक में किसी प्रवाद को जन्म न दें या फिर लोक निन्दा की परवाह किए बिना इस बात का प्रयास करें कि किस प्रकार उन्हें जितनी स्वतंत्रता मिले वह मिले और वह देश के लिए समाज के लिए जितना काम कर सकें, करें। उन्होंने दूसरे रास्ते का चुनाव किया। वे जानते जरूर होंगे कि इतिहास में उनके नाम के आगे अनेक प्रश्नवाचक चिह्न लगाए जाते रहेंगे, परन्तु कार्य सिद्धि के प्रति उनकी निष्ठा ने लोकमत की परवाह नहीं की।

केवल प्रसिद्धि पाने की चाह में यूँ ही जीवन को कुर्बान कर देना सम्भवतः किसी भी देशभक्त को अभीष्ट नहीं हो सकता, यही कारण है कि क्रान्तिकारी धारा के अनेक सपूतों ने जब-जब भी सम्भव हुआ घटनास्थल से बच निकलने का प्रयास किया ताकि अगर वह बच सके तो पुनः राष्ट्र के लिए काम कर सकें और तब भी नहीं बच पाए तो फिर फांसी के फन्दे को भी उन्होंने मस्ती के साथ चूमा, और माँ भारती के लिए अपने प्राणों को हँस-हँसकर उत्सर्ग कर दिया।

शहीद-ए-आजम भगत सिंह ने जब सांडर्स पर गोली चलाई तो उन्होंने व उनके साथियों ने आत्मसमर्पण नहीं किया बल्कि बच निकलने का प्रयास किया और सुविख्यात है कि वीरांगना दुर्गा भाभी के सहयोग से भगत सिंह वहाँ से निकल भी गए। एसेम्बली वाले कृत्य में भगत सिंह का उद्देश्य कुछ और था, वे बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुँचाना चाहते थे, अतः बम धमाके करने के बाद भी वही खड़े रहे ताकि उनको गिरफ्तार किया जा सके और इस सारे प्रक्रम में अत्यन्त महत्वपूर्ण सन्देश वे राष्ट्र की जनता को पहुँचा सकें, यही उनके द्वारा गिरफ्तारी देने का मुख्य कारण था। बाकी तो जान को हथेली पर लिए ये सभी रणवांकुरे घूमते ही थे।

हम देखते हैं 'जब तक स्वतन्त्र रह सकें अच्छा है' यही नीति सावरकर जी ने अपनाई। जब इंग्लैंड में दबाव बढ़ गया तो वे पेरिस चले गए, फिर उनको जब गिरफ्तार करके भारत ले जाया जा रहा था तो भी उनको यही लग रहा था कि अंग्रेज मुझे पूरे जीवन के लिए बन्दी बना देंगे और मैं निष्क्रिय रूप से कालकोठरी में पड़ा रहूँगा, इसलिए उन्होंने, यह जानते हुए भी कि अत्यन्त कठिन है, इस बात की सम्भावना अत्यन्त ही कम है कि वे भाग सकें, फिर भी पानी के जहाज के पोर्टल में से निकल करके समुद्र को पार करके फ्रांस की धरती पर पहुँचकर स्वतंत्र होने के साथ पुनः राष्ट्र का काम कर सकें, इस बात का प्रयास किया, इसी से उनकी नीति का पता चल जाता है। उनको कालकोठरी में बंधना मंजूर केवल और केवल इसलिए नहीं था कि वे यह मानते थे कि स्वतंत्र रहोगे तभी तो कुछ काम करोगे। इसी दृष्टिकोण से अगर हम वीर सावरकर जी की माफी की याचिकाओं को देखें तो सब कुछ साफ हो जाएगा। परन्तु जिन लोगों की 'काक दृष्टि' है, जो स्वस्थ शरीर में केवल घावों को देखते हैं उन्हें तो केवल एक अवसर चाहिए जिससे वे महापुरुषों का अपमान कर सकें।

SS Morea showing location of the porthole

इतिहासकार विक्रम सम्पत ने अपनी पुस्तक Savarkar- ECHOES FROM A FORGOTTEN PAST में लिखा है-
Historian Vikram Sampath writes about the much discussed mercy petitions which Savarkar presented to the British authorities to secure release from the cellular prison. He points out that the process of petitioning the government was a legitimate tool available to political prisoner in British India similar to defending oneself in court through the agency of a lawyer. It was not only Savarkar but several inmates at Andaman who petitioned the government for release. The author notes that Savarkar had often expressed opinion that the primary duty of a revolutionary was to free himself from the clutches of the British in order to return to the freedom struggle. Savarkar had said in such petitions that if freed he would abide why the constitutional process and express loyalty to the English government , this has been seen by his critics as craving in abjectly to the British and by admires as a tactical ploy to get out and resume anti-British fight.

Sampath points out the British never trusted Savarkar's loyalty. Perhaps they knew he was feigning. **"If he had indeed become their prawn why did the British treat him with suspicion and is one of India's most dangerous man for nearly a decade and a half thereafter (after his 1913 petition)"** The fact that his various appeals for release had been rejected have been sought to be brushed aside by his critics. But they contain the most critical information. British authorities refused to release him because he was too dangerous to be trusted. A senior British official once said according to the Sampath 'so important a leader is he, that the European section of the Indian anarchists would plot for his escape which would before long be organized. If he were allowed outside cellular jail in Andaman his escape would be certain.

स्पष्ट है कि सावरकर की याचिकाएँ स्वीकार क्यों नहीं कीं गयीं इस पर विचार अपेक्षित है। जब अन्य कैदियों को छोड़ा गया तब भी सावरकर को नहीं छोड़ा गया। २४ दिसम्बर सन् १९१९ को शाही दयालुता का फरमान जारी हुआ। परिणामस्वरूप सभी प्रान्तीय सरकारों ने राजनैतिक बंदियों की मुक्ति के लिए जेलों के दरवाजे खोल दिए। अण्डमान की पोर्ट ब्लेयर स्थित सेल्युलर जेल जो कालापानी के नाम से विख्यात रही है, उस जेल से भी अनेकानेक राजनैतिक कैदी मुक्त कर दिए गए। 'वीर दामोदर सावरकर और उनके भाई को दस वर्ष की कैद पूरी कर लेने पर भी मुक्त नहीं किया गया जबकि पाँच वर्ष की कैद बिता चुके कई राजनैतिक कैदी मुक्त कर दिए गए थे। शचीन्द्र सान्याल स्वयं लिखते हैं कि मुझे आश्चर्य ही रहा कि अंग्रेजों ने मुझे तो कालापानी से मुक्त कर दिया पर सावरकर को नहीं। वीर सावरकर की रुग्ण अवस्था अपने चरम पर थी। वह लगभग मृत्यु शय्या पर ही थे। सेल्युलर जेल के चिकित्सालय में फेफड़ों के क्षय रोग का उनका इलाज किया गया। दिन भर में दूध का एक घूंट ही उनकी खुराक रह गई थी।'

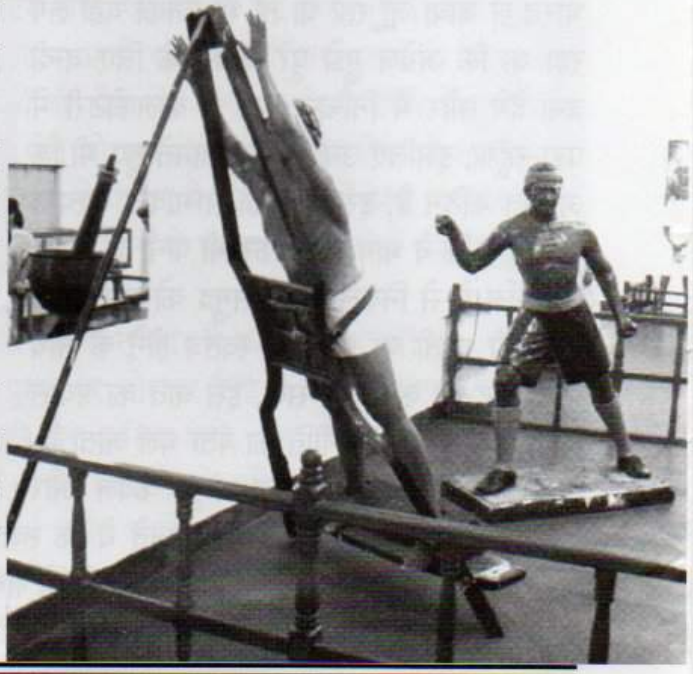

इस बात को मैं कोई प्रमुखता नहीं देता कि महात्मा गाँधी के कहने पर सावरकर जी ने दया याचिका लगाई थी, यह विमर्श महत्वहीन है। अगर कोई भी संवेदनशीलता के साथ, निष्पक्षता के साथ देखेगा तो उसे सर्वत्र सावरकर जी की उक्त नीति दिखाई देगी इसी के कारण उन्होंने दया याचिकाएँ दी थी।

सत्य यह भी है कि सावरकर के पास किसी बड़े आदमी की छत्रछाया नहीं थी अन्यथा उनके साथ भी वैसा चमत्कार हो सकता था जैसा नेहरू जी के साथ नाभा जेल में हुआ था। नाभा जेल के तीन दिन बकौल नेहरू अत्यन्त कठिन थे। पर फिर अचानक सब बदल गया। जब कोर्ट ने उन्हें २ वर्ष की सजा ३ बजे सुनायी तो उसी दिन शाम ७ बजे उन्हें रिहा कर दिया गया। ऐसा क्यों हुआ होगा? वह कौन सा अदृश्य हाथ था, इस पर

पाठकों को ऐतिहासिक तथ्यों की रोशनी में विचार करना चाहिए।
यहाँ पाठकों को संक्षेप में कालापानी की सजा के बारे में भी जानना आवश्यक है। यूँ इस विषय पर स्वयं सावरकर द्वारा लिखित 'काला पानी' एक उत्तम स्रोत है।
काला पानी के जेल जीवन का जिक्र करते हुए आशुतोष देशमुख वीर सावरकर की जीवनी में लिखते हैं 'अण्डमान में सरकारी अफसर बग्घी में चलते थे और राजनीतिक कैदी इन बग्घियों को खींचा करते थे। वहाँ ढंग की सड़कें नहीं होती थीं, और इलाका भी पहाड़ी होता था। जब कैदी बग्घियों को नहीं खींच पाते थे तो उनको गालियाँ दी जाती थीं और उनकी पिटाई होती थी। परेशान करने वाले कैदियों को कई दिनों तक पनियल सूप दिया जाता था। उनके अलावा उन्हें कुनैन पीने के लिए भी मजबूर किया जाता था, इससे उन्हें चक्कर आते थे, कुछ लोग उल्टियाँ कर देते थे और कुछ को बहुत दर्द रहता था।'
कोल्हू में बैल के स्थान पर जोत कर १३ किलो तेल कैदियों से निकलवाने की बात तो प्रसिद्ध है ही।
यहाँ उन सभी लोगों से मेरा प्रश्न है जो सावरकर को कायर और यहाँ तक कि गद्दार कहने में संकोच नहीं करते कि वे अपने गिरेबान में झांक कर देखें कि वे अथवा वे नेता जिनको स्वतंत्रता संग्राम में की गयीं कुर्बानियों की एवज में मोटी-मोटी कुर्सियाँ मिलीं उनकी जेल यात्राओं को जरा सावरकर की जेल यात्राओं से तुलना करके तो देखें।
यहाँ अत्यन्त विनम्रता के साथ यह भी लिख दूँ कि ऐसा लिखने से किसी भी स्वातंत्र्यवीर के योगदान को कम करना मेरा उद्देश्य नहीं है और न ही मैं उनमें कोई तुलना करके किसी को बड़ा क्रान्तिवीर और किसी को छोटा क्रान्तिवीर दिखाना चाहता हूँ, परन्तु हाँ जब वीर सावरकर की सारी जिन्दगी के कार्यकलापों को केवल यह कहकर, क्योंकि उन्होंने क्षमा याचना लगाई थी, रद्दी की टोकरी में डालने का प्रयास, स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रथम दिन से हो रहा है और आज तक हो रहा है, तो अत्यन्त पीड़ा के साथ मैं लिख रहा हूँ कि जो काला पानी की सजा हुआ करती थी वह वीर सावरकर को क्यों दी गई इस पर विचार करने की आवश्यकता है? जब अनेक राजनैतिक बंदियों को सुविधाजनक जेलों में रखा गया तो सावरकर जी को ऐसी ही जेलों में क्यों नहीं रखा गया? एकदम स्पष्ट है कि अंग्रेज सावरकर को इन सभी राजनीतिक कैदियों के मुकाबले अत्यन्त खतरनाक मानते थे और इसीलिए उनकी ५-५ दया याचिकाओं पर अंग्रेज अधिकारियों की यही टिप्पणी थी कि यह उचित नहीं है। क्योंकि वे लोग लंदन से ही सावरकर के क्रियाकलापों को जानते थे, उनकी संगठन क्षमता को जानते थे और राष्ट्र के प्रति उनके उत्कृष्टतम प्रेम को जानते थे और साथ ही यह भी मानते-जानते थे कि केवल असहयोग या सत्याग्रह मात्र सावरकर के हथियार नहीं हैं। सावरकर अट्ठारह सौ सत्तावन के सशस्त्र विद्रोह को भी समर्थन देते हुए उसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सिद्ध करते हैं और ऐसा कहने और लिखने वाले वे भारत के प्रथम क्रान्तिकारी हैं। अतः अंग्रेज चाहते थे कि मुख्य धरती से यह व्यक्ति जितना दूर रहे और ऐसी जगह रहे जहाँ से इसके भागकर पुनः आने की कोई सम्भावना ना रहे और वहाँ इतना कष्ट से मिले कि यह अन्दर बाहर से टूट जाए, इसकी आत्मा चीत्कार कर उठे, ऐसी सजा इसको दी जाए और ऐसी सजा की एक ही जगह थी वह थी अण्डमान की सेल्यूलर जेल, जहाँ नर्क से भी बदतर स्थितियाँ कैदियों को मिलती थीं। रोंगटे खड़े हो जाते हैं जब काला पानी की सजा के विस्तृत विवरण पढ़ते हैं। परन्तु ऐसी जगह पर भी साढ़े १० वर्ष जिस व्यक्ति ने बिताए और फिर भी टूटा ना हो, ऐसा वीर सावरकर ही हो सकता था। दूसरी तरफ नेहरू जी को और उनके अन्य साथियों को कैसी जेल मिलीं वहाँ उन्हें क्या-क्या सुविधाएँ मिलीं? यहाँ स्वयं नेहरू जी की आत्मकथा में उनके द्वारा लिखी हुई कुछ पंक्तियाँ हम प्रस्तुत कर रहे हैं कृपया उन्हें पढ़ने का कष्ट करें।
नेहरू जी अपनी जेल की लघु अवधि के बारे में इतना सुनिश्चित है कि जब १९३४ में उनको गिरफ्तार किया गया तो उन्होंने अपनी पुत्री इन्दिरा को टेलीग्राम दिया कि मैं वापस अपने दूसरे घर में कुछ देर के लिए जा रहा हूँ और यही सत्य है नेहरू जी जितनी भी बार जेल गए वह अवधि कभी भी बहुत लम्बी नहीं रही, दूसरी बात जेल में उनको जिस तरह का ट्रीटमेंट मिलता था वह भी वीवीआईपी कहा जा सकता है। स्वयं नेहरू अपनी आत्मकथा 'टुवर्ड्स फ्रीडम' में इसका जिक्र करते हैं-
Personally I have been very fortunate and almost inevitably I have received courtesy from my own countrymen as well as from the English. Even my jailors and the policeman who have arrested me and escorted me as a prisoner from place to place ever been kind to me, and much of the bitterness of conflict and the sting of Jail life has been toned down because of this human touch. It was not surprising that my own country man should treat me so for I had

gained a measure of notoriety and popularity among them, even for Englishman I was an individual and not nearly one of the mass and I imagine the fact that I had received my education in England and especially my having been to an English public school brought me nearer to them because of this they could not help considering me as more or less civilized after their own better however perverted my public activities appeared to be orphan. I felt I am little embarrassed and humiliated because of this special treatment when I compared my lot with that of most of my colleagues.

वे आगे लिखते हैं-

As a special favour I suppose I was allowed to receive fresh flowers from outside and to keep a few photographs and they cheered me greatly. Ordinarily flowers and photographs are not permitted.

यह तो थी सरल जेल की बात। अब नेहरू जी कठोर कारावास किसे मानते थे- 'मेरी कहानी' पुस्तक में ३१८ पृष्ठ पर नैनी जेल में रहते हुए नेहरू जी एकान्त कारावास की कठोर सजा को कठोरतम मानते हुए उसको पाने वाले कैदी के सम्बन्ध में लिखते हैं- यूँ तो तन्हाई जेल के किसी कसूर के लिए सजा के तौर पर ही दी जाती है मगर इन लोगों को तो अर्थात् क्रान्तिकारियों को जो आमतौर पर कच्ची उम्र के नवयुवक होते हैं शुरू से तन्हाई में ही रखा जाता है चाहे उनका बर्ताव जेल में बहुत अच्छा ही क्यों ना हो। इस तरह अदालत की सजा के अलावा जेल महकमा उसमें बिना किसी सबूत के एक और भयंकर सजा बढ़ा देता है। वे लिखते हैं यह बड़ी असाधारण बात है और कानून की किसी दफा के अनुसार नहीं है। थोड़े वक्त के लिए भी तन्हाई में बन्द रखा जाना एक बड़ी दर्दनाक बात है फिर जब यह वर्षों तक रहे तब तो बड़ी खतरनाक हो जाती है। इससे दिमागी ताकत धीरे-धीरे लगातार घटती जाती है और अन्त में पागलपन की हद तक पहुँच जाती है और कैदी का चेहरा भी भयभीत पशु जैसा दिखने लगता है। यह मनुष्य की शक्ति को धीमे-धीमे खत्म करना या उसकी आत्मा को धीरे-धीरे हलाल करना है। अगर आदमी जिन्दा बचता भी है तो वह एक विलक्षण जीव और दुनिया के लिए भी मौजू बन जाता है और यह सवाल तो हमेशा उठता ही रहता है कि क्या वह व्यक्ति वास्तव में किसी कार्य या अपराध का गुनाहगार था? अभी हिन्दुस्तान में पुलिस के तरीके अर्से से सन्देह की दृष्टि से देखे जाते हैं और राजनीतिक मामलों में तो हुए बहुत ही ज्यादा सन्देहास्पद हैं।' इस वर्णन से स्पष्ट है कि नेहरू जी एकान्त कारावास को ही अत्यधिक कठोर सजा मानते हैं और यह भी मानते हैं उसमें से सही सलामत निकलना असम्भव जैसा कार्य है तो वीर सावरकर ने तो न केवल एकान्त सजा पाई बल्कि कठोरतम अत्याचार उन पर किए गए और उसके पश्चात् भी उन्होंने अपना शेष, पूर्ण जीवन राष्ट्र के समर्पित करते हुए बिताया और अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जितनी भी धाराएँ थीं चाहे वे क्रान्तिकारी अथवा गरम दल या नरम दल अथवा गाँधी जी की सत्याग्रह एवं सविनय अवज्ञा आदि, एक भारतीय के तौर पर और स्वतंत्र भारत में सांस लेने की एवज में हम उन सभी के धन्यवादी हैं सभी का अपना अपना महत्व है।

हम पुनः यह लिखना चाहते हैं इस विवरण से कोई यह न समझे कि हम यह कहना चाहते हैं कि नेहरू जी का अवदान या उनकी राष्ट्रभक्ति या मातृभूमि को स्वतंत्र कराने की उनकी इच्छा शक्ति में कोई कमी थी परन्तु यह बात केवल उन लोगों के लिए है जो सावरकर के आगे वीर लगाने पर एतराज करते हुए, भयंकर एतराज करते हुए उन्हें कायर और यहाँ तक गद्दार तक कह देते हैं। उन्हें अपने सतही विचारों के पुनः मूल्यांकन की आवश्यकता है। काला पानी के बाद सावरकर को रत्नागिरी में भी बन्दी रखा गया अर्थात् अंग्रेज जानते थे कि साढे १० वर्ष के विकट कारागार की सजा सावरकर को तोड़ नहीं पाई,

इसलिए उनके ऊपर पूरे बन्धन लगाए गए। उन दिनों भी सावरकर घर में बैठ नहीं गए, उन्होंने अन्य प्रकार से राष्ट्र की सेवा और उसके घटकों को एक करने के प्रयास में अपने आप को झोंक दिया। क्योंकि अन्ततोगत्वा राष्ट्र जन जितना संगठित होंगे, उतनी ही एकता के साथ विदेशी गुलामी का विरोध करेंगे और उतनी ही शीघ्र आजादी प्राप्त हो सकेगी और उन्होंने ऐसा किया। उनके हिन्दुत्व की परिभाषा पर भी बहुत विवाद है परन्तु इस आलेख में हम उसकी चर्चा नहीं करेंगे। हम यही कहना चाहेंगे कि 'राष्ट्र यज्ञ' में सहस्रों वीरों ने अपने जीवन को अपने सुख को आहूत कर दिया और निसन्देह सावरकर भी उनमें से एक ही नहीं प्रमुख पंक्ति में अपना स्थान रखते हैं उनका मूल्यांकन अगर हम इस रूप में नहीं करते हैं तो निश्चित रूप से हम कृतघ्न हैं।

अनुपम कुमार सिंह 'ऑप इण्डिया' में लिखते हैं कि आज ये कह देना बिलकुल आसान है कि सावरकर ने माफी माँगी थी। दरअसल, ये सब इसीलिए किया जाता है ताकि लोग उनका योगदान भूल जाएँ, हिन्दुत्व की बातें न करें, सावरकर को सम्मान देने में हीन भावना का शिकार हो जाएँ और राष्ट्रवाद के लिए देश में कोई जगह न बचे। ऐसे लोगों को अण्डमान की उस कालकोठरी में बन्द होकर एक सप्ताह बिताना चाहिए, यातनाएँ सहनी तो दूर की बात है।' असल बात तो ये है कि सावरकर ने देश के लिए जो सहा, वो सबके बूते की बात नहीं।

- अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

□□□

वेदश्री: 2021 श्रीमती मीना आर्या धर्मार्थ न्यास के तत्वावधान में

सम्मान समारोह

अध्यक्षता - श्री सज्जन सिंह कोठारी, मुख्य अतिथि - श्री दीनदयाल गुप्त जी, संयोजक - श्री आनन्द कुमार आर्य

वेदश्री: सम्मान से सम्मानित विद्वतजन:-
स्वामी प्रणवानंद सरस्वती जी, स्वामी आर्यवेश जी, आचार्या प्रियम्वदा वेद भारती जी, श्री पी.एन. मिश्र, डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री, आचार्य वेदप्रकाश जी, डॉ. दीनानाथ शास्त्री

स्थान:- मिश्रीलाल कन्या विद्यालय, टाण्डा, उत्तर प्रदेश

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- १०/२१

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये - सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (एकादश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	प १	■	२	२ म	२	२ ग	■	३ सा	३
४ अ	४	प ४	४		४ रा	■	५	र्थ ५	■
६ स	६	६	६ व	■	७	७ क	७	७	७ र्य

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो छल-कपटादि कुत्सित व्यवहार करते हैं, वे क्या कहाते हैं?
२. "शिव उवाच" "पार्वत्युवाच" "भैरव उवाच" ये वाक्य किस सम्प्रदाय द्वारा बनाए गए हैं?
३. जो धार्मिक, विद्वान्, परोपकारी हैं उनको क्या कहते हैं?
४. जब उत्तम उपदेशक और श्रोता नहीं रहते, तब क्या चलती है?
५. वाममार्गियों ने मद्य का क्या नाम धरा है?
६. जो लोकलज्जा, शास्त्रलज्जा, कुललज्जा, देशलज्जा आदि पाशों में बंधा है, वह जीव और जो निर्लज्ज होकर बुरे काम करे वाममार्गियों के अनुसार वो क्या है?
७. उज्जैन के राजा ने किसके कहने से जैन मत का त्याग किया था?

"विस्तृत नियम पृष्ठ १९ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जनवरी २०२२

कौन रक्षा करेगा?

{यह कटु परन्तु नितान्त सत्य है कि आर्यसमाज का गुणात्मक ह्रास हो रहा है। आर्यसमाज के कतिपय पदाधिकारियों के जीवन से शुचिता व सदाचार के लोप तथा सैद्धान्तिक दृढ़ता के अभाव के प्रकरण अनेकों बार सोशल मीडिया में छाये रहे हैं। चिन्तनीय यह है कि इस ओर किसी का ध्यान नहीं है, अर्थात् अप्रकट स्वीकार्यता की स्थिति इस सन्दर्भ में बन गयी है। जो नए पदाधिकारी सामने आ रहे हैं उन्हें या तो आर्यसमाज की विचारधारा का अता-पता ही नहीं है अथवा वे वर्त्तमान सिद्धान्त शिथिलता के वातावरण के ही उत्पाद हैं। हमारा प्रचार भले ही आधुनिकतम तकनीक से युक्त होता जा रहा है परन्तु ऐसी कोई तकनीक अभी नहीं बनी है कि वह आर्यों में सैद्धान्तिक निष्ठा का प्रवेश करा दे। अतः जैसाकि आर्यसमाज के उपनियमों की आत्मा अपेक्षा करती है उसी प्रकार हमें आर्यों का निर्माण प्रारम्भ से ही करना होगा जिसमें वैदिक सिद्धान्तों के प्रति एकान्तिक श्रद्धा अनिवार्य हो। संख्यात्मक वृद्धि जितनी आवश्यक है उससे कहीं अधिक गुणात्मकता को बनाए रखना महत्वपूर्ण है। दुर्बल आत्मा से युक्त शरीर किस काम का?

वैदिक मिशन, मुम्बई के अध्यक्ष तथा पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल के अधिष्ठाता डॉ. सोमदेव शास्त्री आर्य जगत् के जाने माने विद्वान्, चिन्तक तथा लेखक हैं, उन्होंने सीमित शब्दों का प्रयोग करते हुए आज के आर्यसमाज की चिन्त्य अवस्था की ओर इंगित किया है। आर्यों को इसे गम्भीरता से लेना चाहिए।}

ब्रह्मसमाज की स्थापना आर्य समाज की स्थापना से पहले हो गयी थी। महर्षि दयानन्द को कलकत्ता आमन्त्रित करने वालों में ब्रह्मसमाज के नेता भी थे। ब्रह्मसमाज के सुधारवादी विचारों से सहमत होते हुए भी वैदिक सिद्धान्तों पर उनके विचार वेदादि शास्त्रों के अनुकुल न होने से उनकी समालोचना करते हुए ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि- 'अच्छा तो आर्य समाज है उसके उद्देश्य के अनुसार आचरण करो उसी में कल्याण है अन्यथा कुछ भी हाथ नहीं लगेगा।' कुछ वर्षों के बाद ब्रह्मसमाज दो भागों में विभक्त हो गया।

१. प्राचीन ब्रह्मसमाज जिसमें देवेन्द्रनाथ ठाकुर, राजा राम-मोहन राय आदि थे। दूसरा नवीन बह्मसमाज जिसके नेता केशवचन्द्र सेन आदि हुए। धीरे-धीरे ब्रह्मसमाज शिथिल हो गया।

एक समय ऐसा था कि आधे एशिया में बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार था। महाराज अशोक ने अपने बेटे-बेटी को भी बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए लंका भेज दिया था। उस बौद्ध धर्म में भी **१- हीनयान २- महायान** ये भेद हो गये तथा यह भी सिमटकर कुछ स्थानों में रह गया। महर्षि दयानन्द द्वारा संस्थापित तेजस्वी संस्था आर्यसमाज जिसने देश के सामाजिक, आध्यामिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में अद्भुत क्रान्ति मचायी, देश-विदेश के अग्रणी व्यक्तियों को अपने कार्य, सिद्धान्त और व्यवहार के द्वारा नई दिशा दी, जिसने

भी थोड़ी सी भूल की हो, चाहे वह पण्डित भीमसेन हों या महर्षि दयानन्द की प्रेरक जीवनी श्रीमद्दयानन्दप्रकाश के लेखक स्वामी सत्यानन्दजी हों या पदानुक्रम कोष के सम्पादक विश्वबन्धु शास्त्री, सभी को सिद्धान्त विरुद्ध चर्चा करने के कारण आर्यसमाज से बहिष्कृत कर दिया। लाभ-हानि की कोई चिन्ता नहीं की। वैदिक सिद्धान्तों पर आक्षेप करने वालों को तुरन्त उत्तर दिया जाता रहा। आर्यसमाज का कोई उत्सव शास्त्रार्थ और शंका-समाधान के बिना सम्पन्न नहीं होता था। आर्यसमाज ने मुसलमानों, ईसाईयों, जैनियों और पौराणिकों की ओर से होने वाले सैद्धान्तिक आरोपों का आक्रामक रुप से उत्तर ही नहीं दिया अपितु सैद्धान्तिक प्रति-आक्रमण भी किया जिससे वे अपनी सुरक्षा में अपने ग्रन्थों की नवीन व्याख्या करने में लग गये। इसीलिए पण्डित मदनमोहन मालवीय जी ने एक बार भावुक होकर कहा था कि आर्य समाज दौड़ेगा तो हिन्दू समाज चलेगा, आर्यसमाज चलेगा तो हिन्दू समाज बैठ जाएगा, आर्य समाज बैठ जाएगा तो हिन्दू समाज सो जायेगा। और यदि आर्य समाज सो जाएगा तो हिन्दू समाज मर जाएगा। महर्षि दयानन्द ने और उनके बाद आने वाले विद्धानों और पदाधिकारियों ने कभी भी सत्य के साथ समझौता नहीं किया जिससे आर्यसमाज की ओजस्विता और तेजस्विता बनी रही।

कुछ दशकों से आर्य समाज में अन्य साम्प्रदायिक संगठनों और तथाकथित राजनीतिक पार्टियों से जुड़े हुए व्यक्ति छद्मवेशी बनकर आर्यसमाज के सदस्य बन गये और वे आर्यसमाज को कमजोर करने में लगे हुए है। आर्यसमाज के पदाधिकारी बनकर विद्वानों और उपदेशकों को निर्देश देते हैं कि आप अवैदिक मान्यताओं का खण्डन न करके अच्छी अच्छी बातें कहना। सत्यार्थ प्रकाश की चर्चा न करके अर्थलोलुप तथाकथित विद्वान् गीता पर प्रवचन करने लगे, काली की पूजा करने वाले, पूंछ वाले हनुमान की पूजा करने वाले हमारे अपने हैं इनको नाराज नहीं करना है। ऐसे ही लोगों ने स्वामी श्रद्धानन्द और लेखराम के चित्रों के साथ, गोलवल्कर का चित्र भी आर्यसमाज में लगा दिया, जिनका आर्यसमाज के लिए कोई योगदान नहीं रहा। दयानन्द के गुरु का नाम विवेकानन्द तक लिख दिया, पुस्तक छप गई और वितरित भी हो गई थी किन्तु कुछ जागरूक आर्यवीरों के कारण उस पर विराम लगा। धन के बल पर आर्यसमाज के पदाधिकारी बनकर जो आर्य समाज के सिद्धान्तों को नहीं जानते तथा उपदेशकों को क्या उपदेश या प्रवचन करना है ऐसे गैर आर्यसमाजियों ने आर्यसमाजों पर कब्जा कर लिया। जो न तो संध्या करते हैं, न हवन, न स्वाध्याय करते हैं।

एक व्यक्ति जिसे आर्यसमाज के मंत्री पद पर सात वर्ष रहते हुए हो गये इसे यह नहीं पता कि संध्या में 'मनसा परिक्रमा' क्या है? आज आर्य समाज में कांग्रेस, बीजेपी, सपा, बसपा जैसी राजनैतिक पार्टियों के सदस्यों का प्रवेश हो गया है, ये राजनीतिक पार्टियों के झगड़े आर्यसमाज में लाते हैं, और आर्य समाज को कमजोर कर रहे हैं। मेरा इन राजनेताओं से आग्रह है कि आर्यसमाज को कांग्रेस, बीजेपी, सपा, बसपा आदि पार्टियों में ले जाओ जिससे इन कार्यकर्त्ताओं का जीवन और विचारधारा अच्छी बने। आर्यसमाज को राजनीतिक दलदल न बनाओ। हिन्दू समाज का तथाकथित संगठन जो अपने आप को सर्वोपरि मानता है, सभी धर्म अच्छे हैं, सब मत व पूजा पद्धतियाँ ठीक हैं। यदि ऐसा है तो 'अहिंसा परमो धर्म' करने वाले जैनियों और कलकत्ता की काली पर बकरे की बलि देने वालों में, किसको ठीक कहेगें? क्योंकि सत्य दो नहीं होते, अहिंसा और हिंसा तो प्रकाश और अँधेरे के समान एक दूसरे के विरोधी हैं। दयानन्द और आर्य समाज को ठुकराकर या आर्यसमाज को कमजोर कर हिन्दूधर्म की रक्षा नहीं कर सकेगें। सायण और महीधर के वेदभाष्यों में पशुहिंसा, मांस के सेवन का उल्लेख है, गौ हत्या और गौ मांस से यज्ञ में आहुति का विधान है तो गोहत्या का विरोध करने का साहस कैसे करेगें? 'गणानां त्वा गणपतिं हवामहे' यजुर्वेद के इस मंत्र का अर्थ महीधर और उव्वट ने जो अर्थ किया है इसको सार्वजनिक रुप से कहने का साहस आपके संगठन का कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता। ऐसे अवसर पर महर्षि दयानन्द और आर्य समाज ही आपको बचाएंगें। आर्य समाज के नेताओं तथा पदाधिकारियों से निवेदन है कि छद्मवेशी घुसपैठियों को आर्यसमाज के सदस्य बनने से रोको अन्यथा आर्यसमाज के दो टुकड़े हो जाएगें।

१- सैद्धान्तिक आर्यसमाज

२- सर्वप्रिय आर्यसमाज।

बौद्धों के प्रचार को देखकर किसी आर्यबाला ने रोते हुए कहा था- 'को वेदान उद्धरिष्यति' मैं भी दुःखीमना होकर कह रहा हूँ कि 'को आर्य समाज रक्षिष्यति' अर्थात् कौन आर्य समाज की रक्षा करेगा।

लेखक- सोमदेव शास्त्री
अधिष्ठाता- पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल
मीठा जी का खेड़ा, प्रतापनगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)
चलभाष- ९८६९६६८१३०

□□□

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशेष

स्वामी श्रद्धानन्द

अछूतोद्धार के लिए डाक्टर अंबेडकर भी जिनके कृतज्ञ थे।

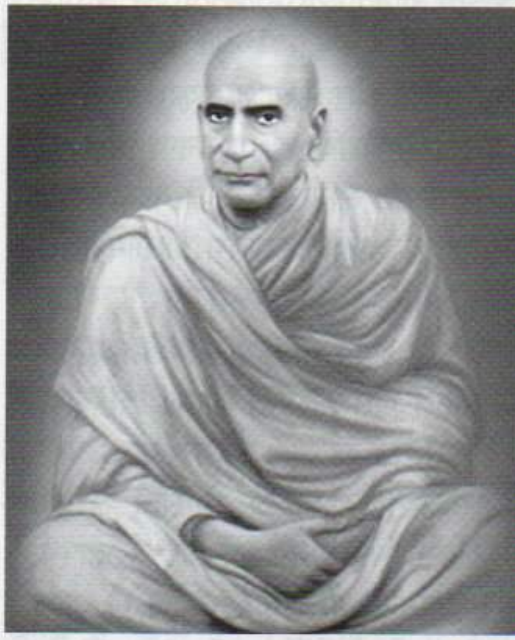

स्वामी श्रद्धानन्द समाप्त होती १९वीं सदी और शुरू होती २०वीं सदी के सर्वाधिक प्रतिभाशाली, तेजस्वी, प्रखर वक्ता, विद्वान् और समाजसेवी थे। अगर वह राजनीति में बने रहते, तो सारे नेता उनसे पीछे होते। अछूतोद्धार उनकी ही परिकल्पना थी। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने लिखा है, 'स्वामी जी दलितों के सर्वोत्तम हितकर्त्ता व हितचिन्तक थे।' बाबा साहेब अम्बेडकर ने १९४५ में 'कांग्रेस और गाँधी जी ने अस्पृश्यों के लिए क्या किया?' नामक ग्रन्थ में यह बात कही है। (पृष्ठ २९-३०) कांग्रेस में रहते हुए स्वामी जी ने जो कार्य किया उसकी उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक प्रशंसा की है। कांग्रेस ने अस्पृश्योद्धार के लिए १९२२ में एक समिति स्थापित की थी। उस समिति में स्वामी जी का समावेश था।

अस्पृश्योद्धार के लिए उन्होंने कांग्रेस के सामने एक बहुत बड़ी योजना प्रस्तुत की थी और उसके लिए उन्होंने एक बहुत बड़ी निधि की भी माँग की थी, परन्तु उनकी माँग अस्वीकृत कर दी गई, अन्त में उन्होंने समिति से त्यागपत्र दे दिया (पृष्ठ २९)। उक्त ग्रन्थ में स्वामी जी के विषय में वे एक और स्थान पर कहते हैं, 'स्वामी श्रद्धानन्द एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने अस्पृश्यता निवारण और दलितोद्धार के कार्यक्रम में रुचि ली थी, उन्हें काम करने की बहुत इच्छा थी, पर उन्हें त्यागपत्र देने के लिए विवश होना पड़ा' (पृष्ठ २२३)।

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म पूर्वी पंजाब के जालन्धर जिले के गाँव तलवन में २२ फरवरी १८५६ को एक खत्री परिवार में हुआ था। उनके पिता नानकचन्द विज यूनाइटेड प्रोविन्स (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में पुलिस इंस्पेक्टर थे। स्वामी श्रद्धानन्द के घर का नाम मुंशीराम और स्कूल का नाम बृहस्पति विज था। बाद में मुंशीराम चला। मुंशीराम जी की पढ़ाई-लिखाई उत्तर प्रदेश के बनारस और बरेली शहरों में हुई। उन्हें महात्मा की उपाधि गाँधी जी ने दी और वे महात्मा मुंशीराम के नाम से जाने, जाने लगे। वर्ष १९१७ में उन्होंने संन्यास ग्रहण किया और वे स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में जाने गए।

बचपन की एक घटना ने उनके अन्दर अस्पृश्यता को लेकर घृणा पैदा कर दी। पहले वे भी १९वीं सदी के तमाम प्रतिभाशाली नवयुवकों की तरह नास्तिकवादी थे। उनके जैसा साहस, धैर्य और ईमानदारी उस समय के किसी भी लोक नायक में नहीं मिलती। उन्होंने अपनी जो जीवनी लिखी है, उसमें सच को जिस तरह और जिस बेरहमी से दिखाया है, वह दुर्लभ है। पहले मैं भी गाँधी जी की जीवनी- 'सत्य के मेरे प्रयोग' को सबसे ईमानदार आत्मकथा समझता था। पर गाँधी जी कई बार उन्हीं घटनाओं का सच्चाई के साथ वर्णन करते प्रतीत होते हैं, जो उनकी राजनीतिक विचारधारा को पुष्ट करें। धर्म, समाज और अन्धविश्वास तथा व्यभिचार पर वे चलताऊ रवैया अपनाते हैं, जबकि स्वामी श्रद्धानन्द कड़ा प्रहार करते हैं।

उनके पिता १८५७ के गदर के समय संयुक्त प्रान्त के किसी शहर, सम्भवतः बनारस में ईस्ट इण्डिया सरकार के कोतवाल थे और वे उनकी निर्ममता के बारे में विस्तार से लिखते हैं। उन्होंने लिखा है, कि बनारस के जिस लाहौरी मोहल्ले में उनका घर था, वहाँ एक दिन अनजाने में उन्होंने किसी भंगिन को छू लिया। पड़ोसी हिन्दुस्तानी खत्रियों ने हंगामा कर दिया। पंजाब की होने के कारण उनकी माँ छुआ-छूत का यूपी वालों जैसी कड़ाई से पालन नहीं करती

थीं। लेकिन जन दबाव के चलते भयंकर ठण्ड में उन्हें बालक मुंशीराम को स्नान करवाना पड़ा। इससे उनके अन्दर अस्पृश्यता को लेकर घृणा पैदा हुई। इसी तरह आगे वे लिखते हैं कि- 'एक दिन सुबह-सुबह वे गंगा नहाने के लिए कांधे पर धोती डाले जा रहे थे, रास्ते में एक मठ से उन्होंने एक स्त्री की चीख सुनी। दौड़ कर वे वहाँ गए, तो स्वयं महन्त को पापकर्म में लिप्त देखा। उन्होंने उस महन्त को गर्दन से धर-दबोचा। पहले तो महन्त के चेले आए, पर यह पता चलने पर कि इस किशोर के पिता शहर कोतवाल हैं, वे भाग निकले।

एक पादरी को ईश प्रचार करते समय इसी तरह के कुछ असामाजिक कार्यों में धुत देख, उन्हें ईश्वर और उनके इन कथित पुरोहितों से नफरत हो गई। बाद में उनके पिता का तबादला बरेली हो गया। वहाँ उन्होंने एक दिन स्वामी दयानन्द को प्रवचन करते सुना और उन्हें लगा, कि इस व्यक्ति में कुछ दम है। और वे स्वामी जी के तर्कों को सुनकर उनके अनुगामी बन गए।

सन् १९०१ में मुंशीराम ने अंग्रेजों द्वारा जारी शिक्षा पद्धति के स्थान पर वैदिक धर्म तथा भारतीयता की शिक्षा देने वाले संस्थान, गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। हरिद्वार के कांगड़ी

गाँव में गुरुकुल विद्यालय खोला गया। गाँधी जी तब दक्षिण अफरीका में संघर्षरत थे। मुंशीराम जी ने गुरुकुल के छात्रों से १५०० रुपये एकत्रित कर गाँधी जी को भेजे। गाँधी जी जब अफ्रीका से भारत लौटे तो वे गुरुकुल पहुँचे और मुंशीराम और राष्ट्रभक्त छात्रों के समक्ष नतमस्तक हो उठे।

महात्मा गाँधी ने सबसे पहले स्वामी श्रद्धानन्द जी को महात्मा की उपाधि से विभूषित किया। उन्होंने उर्दू और हिन्दी में दो समाचार पत्र भी प्रकाशित किए। जलियांवाला काण्ड के बाद

अमृतसर में जब कांग्रेस का ३४वाँ अधिवेशन (दिसम्बर १९१९) में हुआ, तब स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वागत समिति के अध्यक्ष के रूप में अपना भाषण हिन्दी में दिया और हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किए जाने का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने स्त्री शिक्षा के लिए खूब जोर दिया। १९१९ में स्वामी जी ने दिल्ली के जामा मस्जिद क्षेत्र में आयोजित एक विशाल सभा में भारत की स्वाधीनता के लिए प्रत्येक नागरिक को पान्थिक मतभेद भुलाकर एकजुट होने का आह्वान किया था।

स्वामी श्रद्धानन्द के कांग्रेस के साथ मतभेद तब हुए जब उन्होंने कांग्रेस के कुछ प्रमुख नेताओं को मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति पर चलते देखा। कट्टरपन्थी मुस्लिम तथा ईसाई हिन्दुओं का मतान्तरण कराने में लगे हुए थे। स्वामी जी ने असंख्य व्यक्तियों को आर्य समाज के माध्यम से पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित कराया। उन्होंने गैर-हिन्दुओं को पुनः अपने मूल धर्म में लाने के लिये आन्दोलन चलाया, जिसका नाम शुद्धि था। स्वामी श्रद्धानन्द पक्के आर्यसमाजी थे, किन्तु सनातन धर्म के प्रति दृढ़ आस्थावान पण्डित मदनमोहन मालवीय और पुरी की गोवर्धन पीठ के शंकराचार्य स्वामी भारतीकृष्ण तीर्थ को गुरुकुल में आमंत्रित कर छात्रों के बीच उनका प्रवचन कराया था।

२३ दिसम्बर १९२६ को नया बाजार स्थित उनके निवास स्थान पर अब्दुल रशीद नामक एक उन्मादी व्यक्ति ने धर्म-चर्चा के बहाने उनके कक्ष में प्रवेश करके उनकी गोली मार कर हत्या दी थी। बाद में उसे फांसी की सजा हुई। गाँधी जी ने गुवाहाटी अधिवेशन में कांग्रेस के मंच से स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित की थी।

लेखक- शंभूनाथ शुक्ल
सम्पादन सुष्मित सिन्हा

□□□

ईसाईयों द्वारा धर्मान्तरण की समाज सुधारकों द्वारा निन्दा

हमारे देश के सम्भवतः शायद ही कोई चिन्तक ऐसे हुए हों जिन्होंने प्रलोभन द्वारा धर्मान्तरण करने की निन्दा न की हो। महान् चिन्तक एवं समाज सुधारक स्वामी दयानन्द का एक ईसाई पादरी से शास्त्रार्थ हो रहा था। स्वामी जी ने पादरी से कहा कि हिन्दुओं का धर्मांतरण करने के तीन तरीके हैं। पहला जैसा मुसलमानों के राज में गर्दन पर तलवार रखकर जोर जबरदस्ती से बनाया जाता था। दूसरा बाढ़, भूकम्प, प्लेग आदि प्राकृतिक आपदा जिसमें हजारों लोग निराश्रित होकर ईसाईयों द्वारा संचालित अनाथाश्रम एवं विधवाश्रम आदि में लोभ-प्रलोभन के चलते भर्ती हो जाते थे और इस कारण से आप लोग प्राकृतिक आपदाओं के देश पर बार-बार आने की अपने ईश्वर से प्रार्थना करते हैं और तीसरा बाइबिल की शिक्षाओं के जोर-शोर से प्रचार-प्रसार करके। **मेरे विचार से इन तीनों में सबसे उचित अन्तिम तरीका मानता हूँ**। स्वामी दयानन्द की स्पष्टवादिता सुनकर पादरी के मुख से कोई शब्द न निकला। स्वामी जी ने कुछ ही पंक्तियों में धर्मान्तरण के पीछे की विकृत मानसिकता को उजागर कर दिया।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ईसाई धर्मान्तरण के सबसे बड़े आलोचकों में से एक थे। अपनी आत्मकथा में महात्मा गाँधी लिखते हैं- 'उन दिनों ईसाई मिशनरी हाई स्कूल के पास नुक्कड़ पर खड़े हो हिन्दुओं तथा देवी-देवताओं पर गालियाँ उड़ेलते हुए अपने मत का प्रचार करते थे। यह भी सुना है कि एक नया कन्वर्ट (मतान्तरित) अपने पूर्वजों के धर्म को, उनके रहन-सहन को गलियाँ देने लगता है। इन सबसे मुझमें ईसाइयत के प्रति नापसन्दगी पैदा हो गई।' इतना ही नहीं गाँधी जी से मई, १९३५ में एक ईसाई मिशनरी नर्स ने पूछा कि क्या आप मिशनरियों के भारत आगमन पर रोक लगाना चाहते है तो जवाब में गाँधी जी ने कहा था- 'अगर सत्ता मेरे हाथ में हो और मैं कानून बना सकूँ तो मैं मतान्तरण का यह सारा धन्धा ही बन्द करा दूँ। मिशनरियों के प्रवेश से उन हिन्दू परिवारों में जहाँ मिशनरी पैठे हैं, वेशभूषा, रीतिरिवाज एवं खानपान तक में अन्तर आ गया है।'

समाज सुधारक एवं देशभक्त लाला लाजपत राय द्वारा प्राकृतिक आपदाओं में अनाथ बच्चों एवं विधवा स्त्रियों को मिशनरी द्वारा धर्मान्तरित करने का पुरजोर विरोध किया गया जिसके कारण यह मामला अदालत तक पहुँच गया। ईसाई मिशनरी द्वारा किये गए कोर्ट केस में लाला जी की विजय हुई एवं एक आयोग के माध्यम से लाला जी ने यह प्रस्ताव पास करवाया कि जब तक कोई भी स्थानीय संस्था निराश्रितों को आश्रय देने से मना न कर दे तब तक ईसाई मिशनरी उन्हें अपना नहीं सकती।

समाज सुधारक डॉ. अम्बेडकर को ईसाई समाज द्वारा अनेक प्रलोभन ईसाई मत अपनाने के लिए दिए गए मगर यह जमीनी हकीकत से परिचित थे कि ईसाई मत ग्रहण कर लेने से भी दलित समाज अपने मूलभूत अधिकारों से वंचित ही रहेगा। डॉ. अम्बेडकर का चिन्तन कितना व्यवहारिक था यह आज देखने को मिलता है। 'जनवरी १९८८ में अपनी वार्षिक बैठक में तमिलनाडु के बिशपों ने इस बात पर ध्यान दिया कि धर्मांतरण के बाद भी अनुसूचित जाति के ईसाई

परम्परागत अछूत प्रथा से उत्पन्न सामाजिक व शैक्षिक और आर्थिक अति पिछड़ेपन का शिकार बने हुए हैं। फरवरी १९८८ में जारी एक भावपूर्ण पत्र में तमिलनाडु के कैथलिक बिशपों ने स्वीकार किया जातिगत विभेद और उनके परिणामस्वरूप होने वाला अन्याय और हिंसा ईसाई सामाजिक जीवन और व्यवहार में अब भी जारी है। हम इस स्थिति को जानते हैं और गहरी पीड़ा के साथ इसे स्वीकार करते हैं।'

भारतीय चर्च अब यह स्वीकार करता है कि एक करोड़ ९० लाख भारतीय ईसाइयों का लगभग ६० प्रतिशत भाग भेदभावपूर्ण व्यवहार का शिकार है। उसके साथ दूसरे दर्जे के ईसाई जैसा अथवा उससे भी बुरा व्यवहार किया जाता है। दक्षिण में अनुसूचित जातियों से ईसाई बनने वालों को अपनी बस्तियों तथा गिरिजाघर दोनों जगह अलग रखा जाता है। उनकी 'चेरी' या बस्ती मुख्य बस्ती से कुछ दूरी पर होती है और दूसरों को उपलब्ध नागरिक सुविधओं से वंचित रखी जाती है। चर्च में उन्हें दाहिनी ओर अलग कर दिया जाता है। उपासना (सर्विस) के समय उन्हें पवित्र पाठ पढ़ाने की अथवा पादरी की सहायता करने की अनुमति नहीं होती। बपतिस्मा, दृढ़िकरण अथवा विवाह संस्कार के समय उनकी बारी सबसे बाद में आती है। नीची जातियों से ईसाई बनने वालों के विवाह और अन्तिम संस्कार के जुलूस मुख्य बस्ती के मार्गों से नहीं गुजर सकते। अनुसूचित जातियों से ईसाई बनने वालों के कब्रिस्तान अलग हैं। उनके मृतकों के लिए गिरजाघर की घंटियाँ नहीं बजतीं, न ही अन्तिम प्रार्थना के लिए पादरी मृतक के घर जाता है। अन्तिम संस्कार के लिए शव को गिरजाघर के भीतर नहीं ले जाया जा सकता। स्पष्ट

है कि 'उच्च जाति' और 'निम्न जाति' के ईसाइयों के बीच अन्तर्विवाह नहीं होते और अन्तर्भोज भी नगण्य हैं। उनके बीच झड़पें आम हैं। नीची जाति के ईसाई अपनी स्थिति सुधारने के लिए संघर्ष छेड़ रहे हैं, गिरजाघर अनुकूल प्रतिक्रिया भी कर रहा है लेकिन अब तक कोई सार्थक बदलाव नहीं आया है। ऊँची जाति के ईसाइयों में भी जातिगत मूल याद किए जाते हैं और प्रछन्न रूप से ही सही लेकिन सामाजिक सम्बन्धों में उनका रंग दिखाई देता है।

महान् विचारक वीर सावरकर धर्मान्तरण को राष्ट्रान्तरण मानते थे। आप कहते थे 'यदि कोई व्यक्ति धर्मान्तरण करके ईसाई या मुसलमान बन जाता है तो फिर उसकी आस्था भारत में न रहकर उस देश के तीर्थ स्थलों में हो जाती है जहाँ के धर्म में वह आस्था रखता है, इसलिए धर्मान्तरण यानी राष्ट्रान्तरण है।'

इस प्रकार से प्रायः सभी देशभक्त नेता ईसाई धर्मान्तरण के विरोधी रहे हैं एवं उसे राष्ट्र एवं समाज के लिए हानिकारक मानते है।

❑❑❑

- डॉ. विवेक आर्य

विश्व भर से आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज ही गुलाबबाग आने का अवसर मिला। वास्तव में प्रकृति का एक सुनहरा नजारा देखने को मिला। यहाँ पर इतना सुकून मिला जैसा कि यहाँ से पूरे दिन जाने का मन ही नहीं हो। सोने पर सुहागा यह था कि यहाँ की आर्ट गैलेरी देखने का मौका मिला, जिसमें हमें हमारे शूर योद्धाओं के बारे में पता चला है। यहाँ की स्वच्छता इतनी प्यारी है जैसे अपने घर का ऐहसास दिलाती हो। यहाँ के लोगों का व्यवहार व बोलने का तरीका बहुत प्यारा लगा तथा हम यहाँ पर हम नये थे लेकिन एक-एक चीज के बारे में बहुत अच्छे से समझाया। धन्यवाद।

- दिलीप कुमार/वर्षा (जयपुर)

◆◆

आज के आधुनिक भारत में शायद ही किसी युवा को यह ज्ञात होगा कि जो भी आज हम आधुनिक समय में ज्ञान की खोज पर गर्व करते हैं, विशेषकर विदेशी, वह सम्पूर्ण ज्ञान हमारे पूर्वजों द्वारा सेकड़ों वर्ष पूर्व विभिन्न ग्रन्थों में लिखा गया। जैसे- आर्य भट्ट, भास्कराचार्य, पतंजलि आदि। हमें इन्हें सदैव स्मरण रखना चाहिए तथा आने वाली पीढ़ी को इनके बारे में बताना चाहिए जो कि यहाँ आकर सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। शायद सम्पूर्ण भारत में यह एक मात्र स्थान है जहाँ ऋषि मुनियों के बारे में इतने विस्तृत से जानकारी दी गई है। सम्पूर्ण कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद।

- चन्द्रपाल

सावरकर पर हमला क्यों?

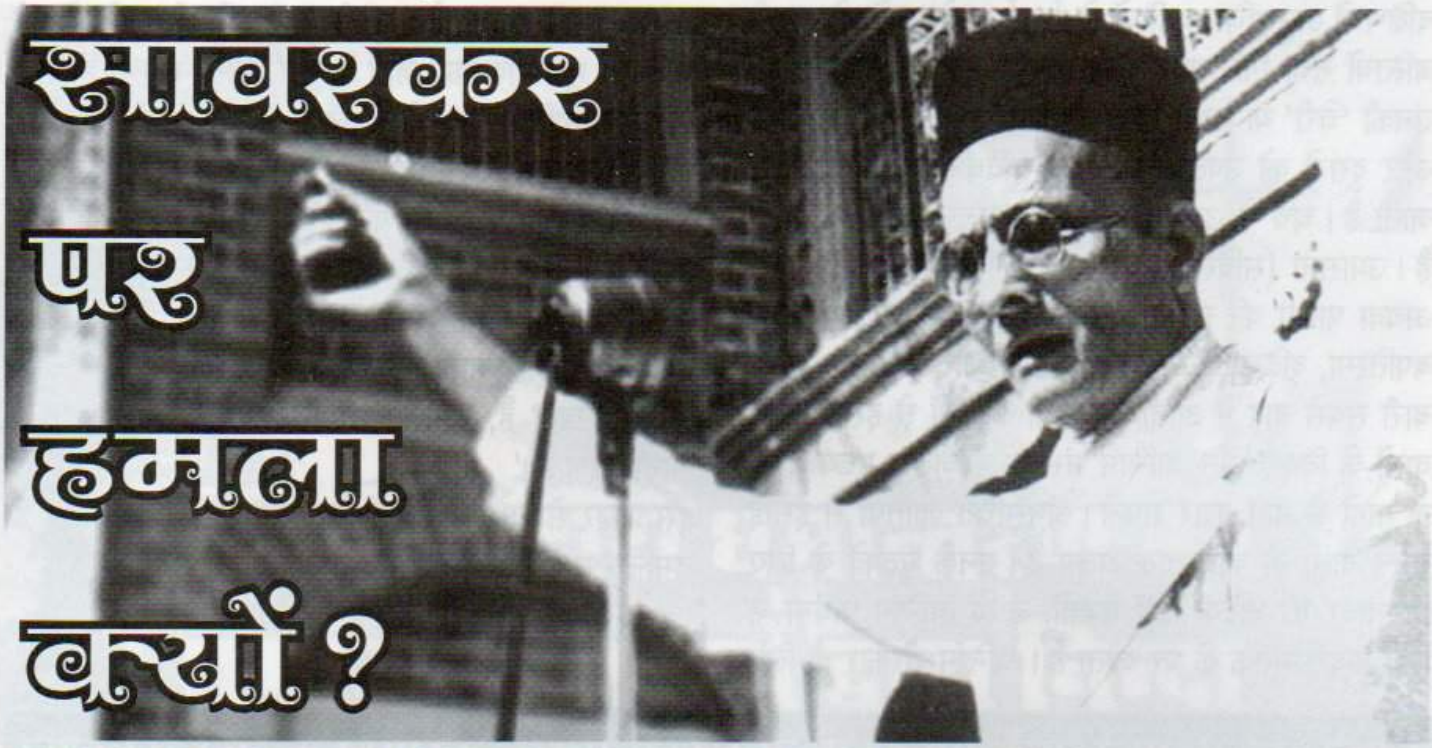

स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर पर एक पुस्तक का विमोचन करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुखिया मोहन भागवत और रक्षा मंत्री राजनाथसिंह ने सावरकर पर किए जानेवाले आक्षेपों का कड़ा प्रतिवाद किया है। उन्होंने सावरकर को बेजोड़ राष्ट्रभक्त और विलक्षण स्वातंत्र्य-सेनानी बताया है। लेकिन कई वामपन्थी और कांग्रेसी मानते हैं कि सावरकर माफी माँगकर अंडमान-निकोबार की जेल से छूटे थे उन्होंने हिन्दुत्व की संकीर्ण सांप्रदायिकता फैलाई थी और उन्होंने ही गाँधी के हत्यारे नाथूराम गोड़से को आशीर्वाद दिया था। गाँधी-हत्याकाण्ड में सावरकर को भी फंसा लिया गया था लेकिन उन्हें ससम्मान बरी करते हुए जस्टिस खोसला ने कहा था कि इतने बड़े आदमी को फिजूल ही इतना सताया गया। स्वयं गाँधीजी सावरकर से लंदन के 'इण्डिया हाऊस' में १९०९ में मिले और १९२७ में वे उनसे मिलने रत्नागिरी में उनके घर भी गए। दोनों में अहिंसा और उस समय की मुस्लिम साम्प्रदायिकता को लेकर गहरा मतभेद था। सावरकर अखण्ड भारत के कट्टर समर्थक थे लेकिन जिन्ना के नेतृत्व में खड़े दो राष्ट्रों की सच्चाई को वे खुलकर बताते थे। वे मुसलमानों के नहीं मुस्लिम लीगियों के विरोधी थे। हिन्दू महासभा के अपने अध्यक्षीय भाषणों में उन्होंने सदा हिन्दुओं और मुसलमानों के समान अधिकार की बात कही। उनके विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ '१८५७ का स्वातंत्र्य-समर' में उन्होंने बहादुरशाह जफर, अवध की बेगमों तथा कई मुस्लिम फौजी अफसरों की बहादुरी का मार्मिक वर्णन किया है। जब वे लंदन में पढ़ते थे तो आसफअली, सय्यद रजा हैदर, सिकन्दर हयात खाँ, मदाम भिकाजी कामा वगैरह उनके अभिन्न मित्र होते थे। उन्होंने खिलाफत आन्दोलन का विरोध जरुर किया। गाँधीजी उसके समर्थक थे लेकिन वही आन्दोलन भारत-विभाजन की नींव बना। यह ठीक है कि सावरकर का हिन्दुत्व ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा का आधार बना लेकिन सावरकर का हिन्दुत्व संकीर्ण और पोंगापन्थी नहीं था। **सावरकर की विचारधारा पर आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द और उनके भक्त श्यामजी कृष्ण वर्मा का गहरा प्रभाव था।** वे इतने निर्भीक और तर्कशील थे कि उन्होंने वेदों की अपौरुषेयता, गौरक्षा, फलित ज्योतिष, व्रत-उपवास, ब्राह्मणी कर्मकाण्ड, जन्मना वर्ण-व्यवस्था, जातिवाद, अस्पृश्यता आदि को भी अमान्य किया है। वे ऐसे मुक्त विचारक और बुद्धिजीवी थे कि उनके सामने विवेकानन्द, गाँधी और अम्बेडकर भी कहीं-कहीं फीके पड़ जाते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी उनके सभी विचारों से सहमत नहीं हो सकता। सावरकर के विचारों पर यदि मुल्ला-मौलवी छुरा ताने रहते थे तो पंडित-पुरोहित उन पर गदा प्रहार किया करते थे। जहाँ तक सावरकर द्वारा ब्रिटिश सरकार से माफी माँगने की बात है, इस मुद्दे पर मैंने कई वर्षों पहले 'राष्ट्रीय संग्रहालय' के गोपनीय दस्तावेज खंगाले थे और अंग्रेजी में लेख भी लिखे थे। उन दस्तावेजों से पता चलता है कि सावरकर और उनके चार साथियों ने ब्रिटिश वायसराय को अपनी रिहाई के लिए जो पत्र भेजा था, उस पर गवर्नर जनरल के विशेष अफसर रेजिनाल्ड क्रेडोक

ने लिखा था कि सावरकर झूठा अफसोस जाहिर कर रहा है। वह जेल से छूटकर यूरोप के आतंकवादियों से जाकर हाथ मिलाएगा और सरकार को उलटाने की कोशिश करेगा। सावरकर की इस सच्चाई को छिपाकर उन्हें बदनाम करने की कोशिश कई बार की गई। अंडमान-निकोबार जेल से उनकी नामपट्टी भी हटाई गई लेकिन मैं तो उस कोठरी

को देखकर रोमांचित हो उठा, जिसमें सावरकर ने बरसों काटे थे और जिसकी दीवारों पर गोदकर सावरकर ने कविताएँ लिखी थीं।

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक
२४२, सेक्टर- ५५, गुड़गाँव (हरि.)

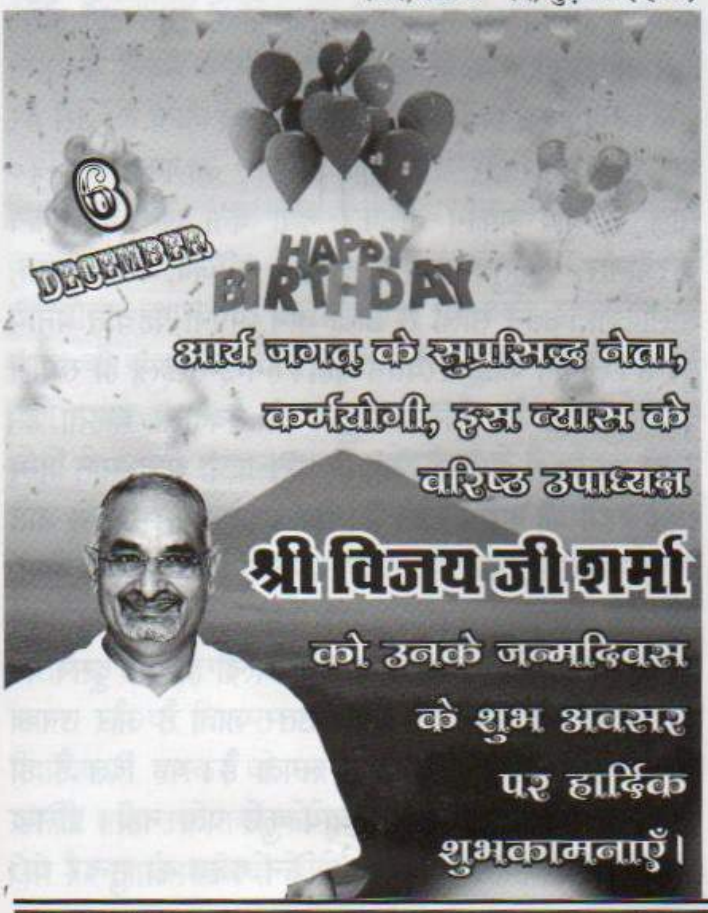

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

इस पर ना जाने कितनी सुन्दरियाँ दिल न्योछावर कर बैठीं थीं। आजकल तो यह एक और कमाल की बात होने लगी है। विवाहित तथा अविवाहित लोग 'लिव इन रिलेशनशिप' के तहत किसी के भी साथ चाहे रह सकते हैं, जब उससे मन उकता जाये उसे लात मारो, किसी दूसरे की उँगली पकड़ लो। मैं जब अधिकांश पति-पत्नियों को आपस में कुत्ते बिल्ली की तरह लड़ते-झगड़ते तथा जिन्दगी बर्बाद करते देखता हूँ तो सोचता हूँ, हमें शादी ही नहीं करनी चाहिए। 'लिव इन रिलेशनशिप' के तहत जब चाहा बैठ गये फिर उड़ गए। और वैसे भी आप ईमानदारी से सोचिये कि विवाह कराने के बाद हमारे जैसे कितनों को सच्चे मायनों में सुख मिला है। हीर तो हममें से किसी को मिलती नहीं और रांझा के भी मिलने का सवाल ही पैदा नहीं होता। एक ही खूंटे से बंधे रहने की बेवकूफी करने का क्या औचित्य है। उतार फेंको दकियानूसी की पुरानी चद्दर। ढूँढ़ों अपने-अपने हीर और रांझा। पुराने और फटे कपड़े हम कभी नहीं पहनते। अलग रंग, डिजाइन एवं फैशन के कपड़े पहनकर ही हमें ज्यादा सुख मिलता है फिर पुराने सम्बन्धों की दलदल में क्यों फंसे रहें। जब हम एक ही जगह या फिर अपने एक ही घर में रहते-रहते उब जाते हैं, तो हम फिल्म देखने किसी पार्क, मॉल या फिर होटल चले जाते हैं। हरिद्वार, माता वैष्णो देवी आदि स्थानों पर जाकर घूमने-फिरने की पिपासा शान्त करते हैं। हम छोटे बच्चे को भी चाहे कितना बढ़िया खिलौना दें, कुछ समय के बाद वे उससे उब जाते हैं। तभी तो हम हर बार उनके लिए नये-नये खिलौने लाते हैं और बच्चा खुश रहता है। यही बात हम सभी की है। अगर हमने सचमुच खुश रहना है तो हर बार नया चाहिए। हमारे यहाँ बसन्त, पतझड़, वर्षा ऋतु, गर्मी, सर्दी आदि कई मौसम हैं। जैसे ही हम एक मौसम से उबने लगते हैं दूसरा मौसम शुरू हो जाता है और फिर तीसरा इस तरह हमारा मन लगा रहता है। आप बेचारे उन लोगों की भी तो सोचिये जो पहाड़ों पर ठिठुरन जैसे माहौल में नर्क भोगते हैं या फिर समुद्र किनारे रहने वाले लोगों का सोचिये जो कि उमस भरे माहौल में रहते हैं। उनकी जिन्दगी कैसी बेबस, डरावनी, दुःखदायी तथा नीरस होगी? हम अपने घरों में रोज सब्जियाँ, दालें, खान-पान की सभी चीजें बदल-बदल कर इस्तेमाल करते हैं। हलवाई भी अपनी दुकान पर खाने पीने की अलग-अलग किस्म की मीठी तथा नमकीन व चटपटी चीजें रखता है। यह अदला-बदली जरूरी है।

अब हमारे राजनेता इस परिवर्तन से कैसे अछूते रह सकते हैं। आज इस दल में, कल उस दल में। देखा जाए तो राजनीति में कोई भी व्यक्ति या दल अछूत नहीं। आया राम गया राम आम बात बनी हुई है। यहाँ कोई किसी का स्थायी मित्र या शत्रु नहीं। कल तक जो एक दूसरे की जान के दुश्मन थे, पानी पी पीकर एक दूसरे का विरोध करते थे गालियाँ निकालते थे। सत्ता सुख प्राप्ति के लिए पलक झपकते ही गलबहियाँ हो जाते हैं, मित्र बन जाते हैं, संसद के अन्दर सत्ता पक्षा तथा विपक्ष एक दूसरे को नीचा दिखने में कोई कसर नहीं छोड़ते। लेकिन सदन के बाहर आते हुए उन्हें मीडिया वाले जब हँसी-मजाक तथा दांत फाड़ते हुए दिखाते हैं तो हमारा माथा ठनक जाता है। कैसे अजीब लोग हैं ये? उनके पीछे लगकर उनके समर्थकों द्वारा एक दूसरे का सिर फोड़ने पर अफसोस तो जरूर होता होगा। पाकिस्तान को कभी अमेरिका अपनी जेब में रखता था लेकिन अब पाकिस्तान चीन की जेब में है। दूसरे विश्वयुद्ध में अमेरिका ने जापान के हीरोशिमा तथा नागासाकी पर बमबारी करके वहाँ विनाश के बीज बोए थे लेकिन अब जिस तरह अमेरिका तथा जापान के खुशगंवार ताल्लुक हैं वह एक मिसाल है। बात श्रीकृष्ण द्वारा आत्मा के द्वारा पुराने शरीर को छोड़कर नये शरीर धारण करने तक ही सीमित नहीं। अब जमाना बदल गया है हम टीवी, फ्रिज, ट्यूबलाईट, कपड़े, गहने, सभ्यता, धर्म, संस्कार आदि सब कुछ बदल रहे हैं। जहाँ जरूरत हो, आप भी बदलिये मजा आ जायेगा।

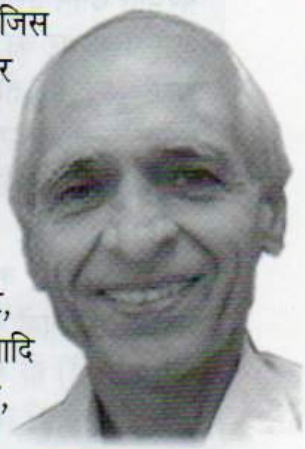

- प्रो. शाम लाल कौशल
मकान नं. ९७५ बी/२०; राजीव निवास
शक्ति नगर, ग्रीन रोड, रोहतक- १२४००१
मोबाइल- ९४१६३५९०४५

□□□

इस पर ना जाने कितनी सुन्दरियाँ दिल न्योछावर कर बैठीं थीं। आजकल तो यह एक और कमाल की बात होने लगी है। विवाहित तथा अविवाहित लोग 'लिव इन रिलेशनशिप' के तहत किसी के भी साथ चाहे रह सकते हैं, जब उससे मन उकता जाये उसे लात मारो, किसी दूसरे की उँगली पकड़ लो। मैं जब अधिकांश पति-पत्नियों को आपस में कुत्ते बिल्ली की तरह लड़ते-झगड़ते तथा जिन्दगी बर्बाद करते देखता हूँ तो सोचता हूँ, हमें शादी ही नहीं करनी चाहिए। 'लिव इन रिलेशनशिप' के तहत जब चाहा बैठ गये फिर उड़ गए। और वैसे भी आप ईमानदारी से सोचिये कि विवाह कराने के बाद हमारे जैसे कितनों को सच्चे मायनों में सुख मिला है। हीर तो हममें से किसी को मिलती नहीं और रांझा के भी मिलने का सवाल ही पैदा नहीं होता। एक ही खूंटे से बंधे रहने की बेवकूफी करने का क्या औचित्य है। उतार फेंको दकियानूसी की पुरानी चद्दर। ढूँढ़ों अपने-अपने हीर और रांझा। पुराने और फटे कपड़े हम कभी नहीं पहनते। अलग रंग, डिजाइन एवं फैशन के कपड़े पहनकर ही हमें ज्यादा सुख मिलता है फिर पुराने सम्बन्धों की दलदल में क्यों फंसे रहें। जब हम एक ही जगह या फिर अपने एक ही घर में रहते-रहते उब जाते हैं, तो हम फिल्म देखने किसी पार्क, मॉल या फिर होटल चले जाते हैं। हरिद्वार, माता वैष्णो देवी आदि स्थानों पर जाकर घूमने-फिरने की पिपासा शान्त करते हैं। हम छोटे बच्चे को भी चाहे कितना बढ़िया खिलौना दें, कुछ समय के बाद वे उससे उब जाते हैं। तभी तो हम हर बार उनके लिए नये-नये खिलौने लाते हैं और बच्चा खुश रहता है। यही बात हम सभी की है। अगर हमने सचमुच खुश रहना है तो हर बार नया चाहिए। हमारे यहाँ बसन्त, पतझड़, वर्षा ऋतु, गर्मी, सर्दी आदि कई मौसम हैं। जैसे ही हम एक मौसम से उबने लगते हैं दूसरा मौसम शुरू हो जाता है और फिर तीसरा इस तरह हमारा मन लगा रहता है। आप बेचारे उन लोगों की भी तो सोचिये जो पहाड़ों पर ठिठुरन जैसे माहौल में नर्क भोगते हैं या फिर समुद्र किनारे रहने वाले लोगों का सोचिये जो कि उमस भरे माहौल में रहते हैं। उनकी जिन्दगी कैसी बेबस, डरावनी, दुःखदायी तथा नीरस होगी? हम अपने घरों में रोज सब्जियाँ, दालें, खान-पान की सभी चीजें बदल-बदल कर इस्तेमाल करते हैं। हलवाई भी अपनी दुकान पर खाने पीने की अलग-अलग किस्म की मीठी तथा नमकीन व चटपटी चीजें रखता है। यह अदला-बदली जरूरी है।

अब हमारे राजनेता इस परिवर्तन से कैसे अछूते रह सकते हैं। आज इस दल में, कल उस दल में। देखा जाए तो राजनीति में कोई भी व्यक्ति या दल अछूत नहीं। आया राम गया राम आम बात बनी हुई है। यहाँ कोई किसी का स्थायी मित्र या शत्रु नहीं। कल तक जो एक दूसरे की जान के दुश्मन थे, पानी पी पीकर एक दूसरे का विरोध करते थे गालियाँ निकालते थे। सत्ता सुख प्राप्ति के लिए पलक झपकते ही गलबहियाँ हो जाते हैं, मित्र बन जाते हैं, संसद के अन्दर सत्ता पक्षा तथा विपक्ष एक दूसरे को नीचा दिखने में कोई कसर नहीं छोड़ते। लेकिन सदन के बाहर आते हुए उन्हें मीडिया वाले जब हँसी-मजाक तथा दांत फाड़ते हुए दिखाते हैं तो हमारा माथा ठनक जाता है। कैसे अजीब लोग हैं ये? उनके पीछे लगकर उनके समर्थकों द्वारा एक दूसरे का सिर फोड़ने पर अफसोस तो जरूर होता होगा। पाकिस्तान को कभी अमेरिका अपनी जेब में रखता था लेकिन अब पाकिस्तान चीन की जेब में है। दूसरे विश्वयुद्ध में अमेरिका ने जापान के हीरोशिमा तथा नागासाकी पर बमबारी करके वहाँ विनाश के बीज बोए थे लेकिन अब जिस तरह अमेरिका तथा जापान के खुशगंवार ताल्लुक हैं वह एक मिसाल है। बात श्रीकृष्ण द्वारा आत्मा के द्वारा पुराने शरीर को छोड़कर नये शरीर धारण करने तक ही सीमित नहीं। अब जमाना बदल गया है हम टीवी, फ्रिज, ट्यूबलाईट, कपड़े, गहने, सभ्यता, धर्म, संस्कार आदि सब कुछ बदल रहे हैं। जहाँ जरूरत हो, आप भी बदलिये मजा आ जायेगा।

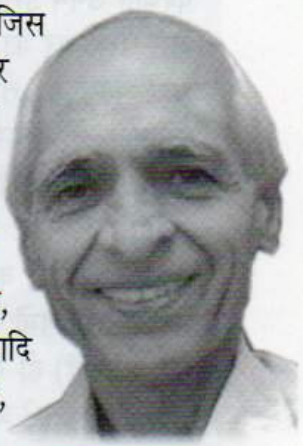

- प्रो. शाम लाल कौशल
मकान नं. ९७५ बी/२०, राजीव निवास
शक्ति नगर, ग्रीन रोड, रोहतक- १२४००१
मोबाइल- ९४१६३५९०४५

□□□

चन्द्रमा पर जीवन की तलाश वैदिक-प्रमाण

प्रस्तुत विषय पर शतपथ ब्राह्मण में यास्काचार्य के निरुक्तशास्त्र की निर्वचन पद्धति की शैली पर 'वसु' शब्द का निर्वचन देते हुए लिखा है-

एतेषुहीदं सर्व वसु हि तमेते हीद सर्व वासयन्ते।
तद्यदिदं सर्व वासयन्ते तस्माद् वसव इति।। - शत. का. १४

अर्थात् इन (ग्रह-उपग्रह आदि) में ये सब पदार्थ (प्राणी) भी बसते हैं ये सब (पदार्थों प्रजा आदि) को (अपने पर या में) बसाते हैं, क्योंकि ये सबको बसाते हैं अतः इन (ग्रह आदि) को वसु कहा जाता है। ऋषि दयानन्द ने शतपथ ब्राह्मण के इस उद्धरण की सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में व्याख्या करके एक अत्यन्त वैज्ञानिक टिप्पणी करते हुए लिखा है- **'जब पृथ्वी के समान सूर्य चन्द्र और नक्षत्र वसु हैं पश्चात् उनमें इसी प्रकार प्रजा के होने में क्या सन्देह?** और जैसे परमेश्वर का यह छोटा सा लोक मनुष्य आदि सृष्टि से भरा हुआ है, तो क्या ये सब लोक शून्य होंगे?' ऋषि दयानन्द ने चन्द्रमा (आदि) पर प्रजा होने की बात सन् १८७५ में कही थी, इसी अभिप्राय की बात (टिप्पणी) आज सर्वप्रसिद्ध सृष्टि विज्ञानवेत्ता स्टीफन्स हाकिंग ने आज से २-३ वर्ष पहले कही थी कि जब भूमि पर (पृथ्वी पर) डी. एन.ए. (प्राणियों की उत्पत्ति का मूल बीज जिससे सब प्राणी पैदा होते हैं) हो सकता है, तो चन्द्रमा पर डी.एन.ए. क्यों नहीं हो सकता? ऋषि दयानन्द ने शतपथ ब्राह्मण के उपर्युक्त उद्धरण को एक प्रश्न के उत्तर में दिया है। प्रश्न था, 'सूर्य, चन्द्र और तारे क्या वस्तु हैं, और उनमें मनुष्य आदि सृष्टि है वा नहीं?' इस प्रश्न के उत्तर में ऋषि ने जो लिखा, वह चन्द्रमा पर मनुष्य जीवन की खोज में लगी आज की अमेरिका की संस्था 'नासा' (NASA) के लिए एक मार्गदर्शक भविष्यवाणी है। ऋषि ने उत्तर दिया- 'ये सब भूगोल लोक, और इनमें मनुष्य आदि प्रजा भी रहती है।'

चन्द्रमा पर जीवन की खोज में लगे 'नासा' ने चन्द्रमा पर अब पानी (जल) को खोजा है जो जीवन का मूल आधार है किन्तु चारों वेदों ने चन्द्रमा में जल की विद्यमानता आज से लाखों (अरबों) वर्ष पहले बतला दी थी।

चन्द्रमा पर जैविक सृष्टि के मूल आधार जल (पानी) के होने के प्रमाण हम विश्व के सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों से प्रस्तुत करते हैं, वेद भी एक से नहीं अपितु चारों वेदों से। मंत्र निम्न प्रकार से है-

चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। न वो हिरण्यनेमयः
पद विन्दति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसि।।
- ऋ. का. १ सू. १०५ मं. १

सामवेद पू. ५/१/३/६ में यह मंत्र ज्यों का त्यों दे रखा है। अथर्ववेद का १८ सू ४ मं. ८६ में भी यह ज्यों का त्यों विद्यमान है। यजुर्वेद में इस मंत्र का प्रथम चरण ज्यों का त्यों मौजूद है किन्तु दूसरे और तीसरे चरण में अन्तर है। यजुर्वेद में यह मंत्र निम्न प्रकार से है-

चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्मृहः हरिरेति कनिक्रदत्।। - ३३/६०

यहाँ हमारे मंत्र का विचारणीय चरण प्रथम ही है जो चारों वेदों में समान रूप से निम्न प्रकार से है-

चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।

चारों वेदों में इस मंत्र का देवता (वर्णनीय विषय) चन्द्रमा ही है। ऋषि दयानन्द ने अपने ऋग्वेद भाष्य में ऋक् मं.१ सू. १०५ मंत्र १ पर इस मंत्र के भाष्य में मंत्र के वर्णनीय विषय की भूमिका बतलाते हुए लिखा है 'अथ चन्द्र लोकः कीदृश इत्युपदिश्यते' अर्थात् (वह) चन्द्रलोक कैसा है इसका वर्णन (उपदेश) इस मंत्र में किया गया (जाता) है। सायण, महीधर, उव्वट, वेंकट माधव से लेकर ऋषि दयानन्द तक सभी वेद भाष्यकार इस बात पर सहमत हैं कि इस मंत्र में वर्णन चन्द्रमा का ही है, जैसा कि मंत्र के पठन मात्र से स्पष्ट हो जाता है कि मंत्र में सर्वप्रथम प्रारम्भ में पठित 'चन्द्रमा' शब्द प्रथमा विभक्ति में है जो आगे पढ़े गए समूचे मन्त्रांश का कर्ता हैं। सुपर्णः (सुपर्णो) चन्द्रमा का विशेषण है जिसका अर्थ है 'सुन्दर पर्णों (पंखों) वाला (यह अलंकार है)।' 'अप्सु अन्तरा' शब्द अधिकरण में है और यह अधिकरण औपश्लेषिक है अर्थात् चन्द्रमा पानी में डूबा हुआ नहीं है अपितु पानी चन्द्रमा में सागर के रूप में सर्वत्र व्याप्त है (यह तथ्य अभी खोज का विषय है)। 'दिवि' शब्द मंत्र में अधिकरण है और 'धावते' का प्रयोगकर्त्ता की क्रिया के रूप में किया गया है। अब मंत्र का अर्थ निम्न प्रकार से बनेगा-

सुन्दर पर्णों (पंखों) वाला चन्द्रमा (जो) पानी में उपश्लिष्ट है (वह) द्युलोक (आकाश) में दौड़ लगा रहा है यह तो हुआ शब्दार्थ। व्याख्या बड़ी वैज्ञानिक तथ्यों से भरपूर है।

सबसे पहले प्रथम वैज्ञानिक तथ्य तो यह बतलाया है कि चन्द्रमा पानी (जल) से उपश्लिष्ट है। इसके दोनों अभिप्राय हैं कि चन्द्रमा में (चन्द्रमा के अन्दर या ऊपर) पानी है। दूसरा वैज्ञानिक तथ्य वेद मंत्र यह बतला रहा है कि चन्द्रमा आकाश में न केवल गति कर रहा है अपितु दौड़ रहा है। चन्द्रमा की गति (दौड़) कितनी है, यह आज का विज्ञान जानता है, लिखने की आवश्यकता नहीं है।

गति (चलना या दौड़ना) के लिए या तो पैरों की आवश्यकता होती है या पत्रों (परों) की। भूमि या किसी अन्य ठोस आधार पर चलने के लिए पैरों की आवश्यकता होती है किन्तु आकाश में गति (गमन) करने के लिए पैर काम नहीं करते अपितु वहाँ पंख (पर) चाहिए। चन्द्रमा की गति आकाश में होती है। किसी ठोस भौतिक आधार पर नहीं, अतः चन्द्रमा को सुपर्ण कहा। पर्ण का शब्दिक अर्थ पत्ता भी होता है। जब पक्षी या वायुयान के पंख उड़ने के लिए खुलते हैं तो वे पत्ते की भान्ति दिखायी देते हैं। अतः पर्ण शब्द का प्रयोग वेद में अत्यन्त सटीक है। पर्ण भी सुन्दर या शोभन हैं, ईश्वर की रचना सुन्दर या शोभन ही होती है, जो कभी बिगड़ती या विकृत नहीं होती।

यह प्रथम चरण चारों वेदों में समान रूप से एक ही जैसा है जिस में (चन्द्रमा) शब्द के एकदम बाद 'अप्स्वन्तरा' शब्द है जो सर्वप्रथम चन्द्रमा में पानी होने के तथ्य को दर्शाता है, चन्द्रमा में गति की बात इसके बाद कही है। हमारा मुख्य प्रयोजन यहाँ वेदों के प्रमाण के आधार पर चन्द्रमा में पानी दिखलाना है, जिसकी खोज नासा ने अब की है और पानी

दिखलाने का भी हमारा ध्येय यही है कि जब पानी है तो जैविक सृष्टि (प्राणी) भी अवश्य होंगे। इसी उद्देश्य को लेकर हम ने यह लेख लिखा है।

जैसा हमने पहले कहा और लिखा कि मंत्र का यह प्रथम चरण चारों वेदों में समान है, केवल यजुर्वेद में इस मंत्र के अगले चरण भिन्न हैं, शेष तीनों वेद ऋक्, साम और अथर्व में यह पूरा मंत्र समान है। मंत्र के इस प्रथम चरण की ही अपेक्षा हमें अपने वर्त्तमान उद्देश्य के लिए है, शेष चरणों की व्याख्या फिर कभी आवश्यकता होने पर करेंगे, जो ऋषि दयानन्द की प्रस्तावना 'अथ चन्द्र लोकः कीदृश इत्युपदिश्यते' की पूरी व्याख्या होगी।

वेदों में और भी कई मंत्र हैं, जो चन्द्रमा में पानी की विद्यमानता का वर्णन करते हैं या संकेत तो अवश्य देते हैं, जिसके कारण चन्द्रमा को वसु कहा गया है। प्राचीन भारतीय ज्योतिष्शास्त्र के ग्रन्थों में भी चन्द्रमा के इस विषय पर बहुत कुछ कहा गया है। किन्तु विस्तार भय से हम और नहीं लिख रहे। नासा ने सितम्बर २०१६ को दूरदर्शन पर यह घोषणा करके वेद की वैज्ञानिकता पर मोहर लगा दी है, कि चन्द्रमा के चारों तरफ सागर है। वैज्ञानिकों की इस दिशा में आगे खोज जारी है।

लेखक - वेदमार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक
वैदिक शोध सदन, दिल्ली
'वैदकि ज्ञान विज्ञान सम्पदा' से उद्धृत

□□□

कर्मयोगी पिताश्री का एक अत्यन्त मार्मिक और शिक्षाप्रद पत्र पुत्र के नाम

चि. बसन्त

दीपावली संवत् 1991

यह जो लिखता हूँ उसे बड़े होकर और बूढ़े होकर भी पढ़ना। अपने अनुभव की बात कहता हूँ। संसार में मनुष्य जन्म दुर्लभ है यह सच बात है और मनुष्य जन्म पाकर जिसने शरीर का दुरुपयोग किया वह पशु है। तुम्हारे पास धन है, तन्दुरस्ती है, अच्छे साधन हैं। उनका सेवा के लिए उपयोग किया तब तो साधन सफल हैं, अन्यथा वे शैतान के औजार हैं। तुम इतनी बातों का ध्यान रखना।

1. धन का मौज शौख में कभी उपयोग न करना। रावण ने मौज-शौख की थी, जनक ने सेवा की थी।

   धन सदा रहेगा भी नहीं इसलिए जितने दिन पास में हैं उनका उपयोग सेवा के लिए करो। अपने ऊपर कम से कम खर्च करो बाकी दुखियों का दुःख दूर करने में व्यय कर।

2. धन शक्ति है। इस शक्ति के नशे में किसी के साथ अन्याय हो जाना सम्भव है, इसका ध्यान रखना।

3. अपनी सन्तान के लिए यही उपदेश छोड़कर जाओ। यदि बच्चे ऐशोआराम वाले होंगे तो पाप करेंगे और हमारे व्यापार को चौपट करेंगे। ऐसे नालायकों को धन कभी न देना। उनके हाथ में जाय उसके पहिले ही गरीबों को बाँट देना। क्योंकि तुम्हें यह समझना चाहिए कि तुम Trustee हो और हम भाइयों ने व्यापार को बढ़ाया है तो यह समझकर कि तुम लोग धन का सदुपयोग करोगे।

4. सदा यह ख्याल रखना कि तुम्हारा धन यह जनता की धरोहर है। तुम उसे अपने स्वार्थ के लिए उपयोग नहीं कर सकते।

5. भगवान को कभी न भूलना, वह अच्छी बुद्धि देता है।

6. इन्द्रियों पर काबू रखना। वरना यह तुम्हें डुबो देंगी।

7. नित्य नियम से व्यायाम करना।

8. भोजन को दवा समझकर खाना। जो स्वाद के वश होकर खाते हैं वे जल्दी मर जाते हैं और न काम कर पाते हैं।

काकोजी
(घनश्याम दास बिड़ला)

"पिता को अपनी सन्तान को कैसी शिक्षा देनी चाहिए, यह अपने समय के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री घनश्याम दास बिड़ला जी द्वारा उनके पुत्र को लिखे पत्र से ज्ञात होता है। इस पत्र को हमारे पास प्रसिद्ध जैन विद्वान् डॉ. पारसमल जी अग्रवाल ने प्रेषित किया है। इनका आभार। -सम्पादक"

अदरक : स्वाद से सेहत तक

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य चर्चा स्तम्भ में इस बार अदरक के बारे में जानकारी दी जा रही है। अदरक से सभी लोग परिचित हैं। भोजन के पूर्व अदरक के छोटे-छोटे टुकड़े करके नमक मिलाकर खाने से भूख खुलती है। अरुचि दूर होती है। खाना ठीक से हजम होता है। गैस, अजीर्ण वगैरह नहीं होता। अदरक को सुखाकर नमक, काला नमक और अजवायन डालकर चूर्ण भी बनाया जाता है।

अदरक से जुड़े कुछ उपयोगी घरेलू नुस्खे यहाँ दिये जा रहे हैं-

अदरक का रस शहद में मिलाकर लेने से गला ठीक होता है। आवाज में मधुरता आती है। अदरक का रस, नींबू का रस तथा सेंधा नमक एक साथ मिलाकर भोजन के प्रारम्भ में लेने से मंदाग्नि दूर होती है। गैस भी नहीं होती है। अदरक तथा पुदीने एवं तुलसी के पत्तों से उल्टी बन्द हो जाती है।

अदरक, पुदीने का रस ५-५ ग्राम और सेंधा नमक दो ग्राम मिलाकर पीने से पेट दर्द में तुरन्त राहत मिलती है।

कब्ज की शिकायत हो तो अदरक, अजवायन और गुड़ समान मात्रा में कूट लें, फिर थोड़े से घी में भूनकर पानी डालकर पका लें। इसको रोज खाने से कब्ज नहीं होती है।

अदरक के टुकड़ों को तिल के तेल के साथ गर्म करके छान लें। फिर इस तेल से जोड़ों में मालिश करें। दर्द में राहत मिलेगी। गठिया रोग में अदरक के बारीक टुकड़े करके गाय के घी में भूनकर खाने से आराम मिलता है।

लकवा होने पर अदरक को पीसकर शहद के साथ मिलाकर रोगी को खिलाने से आराम मिलता है।

□□□

- संदीप जैन
कार्यालय अधीक्षक, कोचिंग डिपो
पश्चिम रेलवे, इन्दौर

धर्मसेवा में अमर शहीद ये चार लाड़ले

कथा
सरित

आज हम आपको चार अमर शहीद बच्चों का स्मरण करा रहे हैं, जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर अपने को कुर्बान कर दिया था। वयस्कों में तो बुद्धि होती है, सोचने समझने की ताकत होती है। आन-शान, इज्जत और प्रतिष्ठा का ख्याल होता है। पर इन छोटे लाड़ले बच्चों के खून की गरमी तो देखिये। कितनी दृढ़ता है, कितना साहस है, कैसी उत्कट लगन है। भय का नाम निशान नहीं। ओफ! इन ६-८-१० वर्ष के बच्चों में कितनी दिलेरी है। सम्भवतः इन्होंने दादाजी (गुरु तेग बहादुर जी) की कुर्बानी सुनी होगी और पिताजी (गुरु गोविन्द सिंह) तो अभी जूझ ही रहे थे। युद्धों के और बहादुरों के वातावरण में तो ये बच्चे अभी पनपे ही थे। शाही दरबार से गुरु गोविन्द सिंह जी की कई मुठभेड़ें हुईं। गुरु गोविन्द सिंह की बढ़ती हुई शक्ति और शूरता को देखकर औरंगजेब झुँझलाया हुआ था। उसने शाही फरमान निकाले कि पंजाब के सभी सूबों के हाकिम और सरदार तथा पहाड़ी राजा मिलकर आनन्दपुर को बर्बाद कर डालें और गोविन्द सिंह को गिरफ्तार करें या उनका सिर काट कर शाही दरबार में हाजिर करें। फिर क्या था, आक्रमण कर दिया गया, घमासान युद्ध हुआ। कई राजाओं के दल के साथ शाही सेना और कहाँ मुट्ठी भर सिख-सरदारों की सेना! मुगल सेना बीस गुना अधिक थी; फिर भी सिखों की सेनाओं ने कमाल किया। आनन्दपुर के किले में रहते हुए शाही सेना को परेशान कर दिया। लड़ाई बहुत दिनों तक चली। शाही सेना आनन्दपुर किले को घेर कर जम गई। इधर सिखों के रसद सामान घटने लगा, परेशानियाँ बढ़ गयीं। सिख सेना भूख से घबरा गई। अपने साथियों के विचार से बाध्य होकर अनुकूल अवसर जान आधी रात में सपरिवार गुरुजी ने किला छोड़ दिया। शाही फौज को जब बाद में पता लगा, हलचल मच गई, सेनाओं की दौड़ होने लगी। उसी हो-हल्ले में गुरुजी के परिवार वाले बिलग-बिलग हो भटक गये। गुरुजी की माता अपने छोटे पोते जोरावर सिंह तथा फतेह सिंह के साथ दूसरी ओर निकल पड़ी। साथ में उनका एक रसोइया था। रसोइये के विश्वासघात के कारण ये लोग सेनाओं द्वारा गिरफ्तार कर सूबा सरहिन्द भेज दिये गये। सूबा सरहिन्द ने गुरु गोविन्द के दिल पर चोट पहुँचाने के ख्याल से उन दोनों छोटे बच्चों को मुसलमान बनाने का निश्चय किया।

भरे दरबार में जोरावर सिंह और फतेह सिंह नामक बच्चों से वजीद खाँ नामक सूबेदार ने कहा- 'ऐ बच्चों! तुम लोगों को दीन इस्लाम की गोद में आना मंजूर है या कत्ल होना?' दो-तीन बार पूछने पर जोरावर सिंह ने कहा- 'कत्ल होना कबूल है।' वजीद खाँ बोला- 'बच्चों! दीन इस्लाम में आकर सुख से दुनिया की मौज हासिल करो, अभी तो तुम्हारे फलने-फूलने का समय है। मृत्यु से भी इस्लाम-धर्म को बुरा समझते हो? जरा सोचो! अपनी जिन्दगी को क्यों गंवा रहे हो?' जोरावर सिंह शावकों की तरह हँसकर बोले- 'हिन्दू धर्म से बढ़कर संसार में कोई धर्म नहीं। अपने धर्म पर मरने से बढ़कर सुख देने वाला दुनिया में कोई काम नहीं, अपने धर्म की मर्यादा पर मिटना तो हमारे कुल की रीति है। हम लोग इस क्षणभंगुर जीवन की परवाह नहीं करते। मर मिटकर भी धर्म की रक्षा करना ही हमारा अन्तिम ध्येय है, चाहे तुम कत्ल करो या तुम्हारी इच्छा

हो, वो करो।'

इसी तरह भाई फतेह सिंह जी की भी ओजस्वी वाणी से शाही सल्तनत आश्चर्यचकित हो उठी। मन-ही-मन लोग हैरान हो गये। दरबार के सभी सूबों ने शाबाशी दी, पर अन्यायी शासक को यह कैसे सहन होता। काजियों एवं मुल्लाओं की राय से इन्हें दीवार में चुनवाने की बात तय हुई। जीते-जी इन्तजाम हो गया। एक गज की दूरी पर दोनों भाई दीवार में चुने जाने लगे। धर्मान्ध सूबेदार ने कहा- 'ऐ बालकों! अभी भी तुम्हारे प्राण बच सकते हैं, कलमा पढ़कर मुसलमान-धर्म स्वीकार कर लो, मैं तुम्हें नेक सलाह देता हूँ।' वीर जोरावर सिंह ने गर्जना करते हुए कहा- 'अरे अत्याचारी नराधम! अब तू क्या बकता है। मुझे तो आज खुशी हैं कि पंचम गुरु अर्जुनदेव और दादा गुरु तेगबहादुर के मिशन को पूरा करने के लिए मैं अपनी कुर्बानी दे रहा हूँ। तेरे जैसे अत्याचारियों से यह धर्म मिटने का नहीं, बल्कि हमारे खूनों से इसके पौधे सींचे जा रहे हैं। आत्मा अमर है, इसे कौन मार सकता है।'

दीवार शरीर को ढकती हुई ऊपर बढ़ती जा रही थी। छोटे भाई फतेह सिंह की गर्दन तक दीवार आ गई थी। वे पहले ही आँखों से ओट हो जानेवाले थे। जोरावर सिंह ने देखा- भाई फतेह मुझ से पहले मृत्यु का आलिंगन कर रहा है। उसकी आँखों में आँसू की बूंदें आ गयीं। हत्यारे सूबेदार ने समझा- अब मुलजिम नम्र हो रहा है; मन-ही-मन प्रसन्न हो, वह बोला- 'जोरावर! अब भी बता दो, तुम्हारी इच्छा क्या है? रोने से क्या होने को है' जोरावर ने गम्भरीपूर्वक उत्तर दिया- 'आज मैं बड़ा अभागा हूँ कि अपने छोटे भाई से पहले मैंने जन्म धारण किया, माता का दूध और जन्मभूमि का अन्न, जल ग्रहण किया, धर्म की शिक्षा ली; किन्तु धर्म के निमित्त जीवन-दान देने का सौभाग्य मेरे से पहले छोटे भाई फतेह को प्राप्त हो रहा है कि मैं भाई फतेह के बाद अपनी कुर्बानी कर रहा हूँ।' देखते-देखते दोनों बालक दीवार में चुन दिये गये।

उधर गुरु गोविन्द सिंह जी की सारी सेनाएँ लड़ते-लड़ते समाप्त हो चुकी थीं। बड़े पुत्र कुमार अजीतसिंह से रहा नहीं गया, पिता के पास आकर वे बोले- 'पिताजी! जीते-जी बन्दी होना कायरता है, भागना बुजदिली है। इससे अच्छा है लड़कर मरना। आप आज्ञा करें, मैं इन यवनों के छक्के छुड़ा दूँ या मृत्यु का आलिंगन करूँ। वीर पुत्र की वाणी सुन गुरुजी का कलेजा फूल उठा, वे बोले- 'शाबाश! धन्य हो, पुत्र! जाओ, स्वदेश और स्वधर्म के निमित्त अपना कर्तव्य पालन करो। हिन्दूधर्म को तुम्हारे जैसे वीर बालकों की कुर्बानी की आवश्यकता है।' फिर क्या था- बहादुर अजीत आठ-दस सिखों के साथ युद्धस्थल में जा धमका और देखते-देखते गाजर-मूली की तरह बड़े-बड़े सरदारों का काम तमाम कर खुद भी मर मिटा।

ऐसे ही वीर बालकों की गाथा से भारतीय इतिहास अमर हो रहा है। उनसे छोटे भाई बालक जुझारसिंह से कैसे बैठा रहा जाता। वह भी गुरु गोविन्दसिंह जी के पास जा पहुँचा और बोला- 'पिताजी! बड़े भैया तो वीरगति को प्राप्त हो गये, पर मैं क्या इस संसार में ही रहूँगा? मुझे भी भैया का अनुगामी बनने की आज्ञा दीजिये।'

गुरुजी का हृदय भर आया, उन्होंने उठकर जुझार को गले लगा लिया। वे बोले- 'जाओ, बेटा! तुम भी अमरपद प्राप्त करो; देवता तुम्हारी इन्तजारी कर रहे हैं।' 'सत्य श्रीअकाल' कहकर बालक जुझार उछल पड़ा, उसके रोयें-रोयें फड़कने लगे। गुरुजी ने उसे वीर-वेश से सज्जित कर दिया और आशीर्वाद दिया।

वीर जुझार पिताजी को नमस्कार कर अपने कुछ सरदार साथियों के साथ हाड़ी नामक घोड़े पर सवार हो युद्ध में जा जूझे! जिधर ही जुझार जाता उधर ही मानो महाकाल की लपलपाती हुई जिह्व सेनाओं को चाट रही है, ऐसा मालूम होता था। देखते-देखते मैदान साफ हो गया; परन्तु अन्त में प्यासा, थका-मांदा वह लाड़ला बालक भी मृत्यु की भेंट चढ़ गया। देखने वाले दुश्मन भी धन्य-धन्य करने लगे। धन्य है वह देश, धन्य हैं वे माता-पिता, जिन्होंने इन लाड़ले चार पुत्र रत्नों को जन्म दिया और देश, धर्म, जाति के नाम पर उन्हें उत्सर्ग कर दिया! अमर शहीद इन चारों वीर बालकों की जय हो!

समाचार

महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने किया सत्यार्थ प्रकाश भवन का अवलोकन

उदयपुर के गुलाबबाग स्थित सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, जहाँ साढ़े छः माह विराजकर महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन पूर्ण किया था वहाँ २ नवम्बर २०२१ को अपने उदयपुर प्रवास के दौरान श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन करने हेतु गुजरात के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी सपरिवार पधारे थे।

इस अवसर पर नवलखा महल के माता लीलावन्ती वैदिक संस्कृति सभागार में शहर के आर्यसमाज से जुड़े पदाधिकारियों व आर्यजनों को

सम्बोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने बताया कि 'महर्षि दयानन्द ने चालीस ग्रन्थों की रचना की उनमें से उनका मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है जिसका प्रणयन महर्षि ने यहाँ नवलखा महल में किया था। सत्यार्थ प्रकाश की लेखन स्थली समाज के लिए प्रेरणा स्रोत है। ऐसी पावन स्थली देश के आकर्षण का केन्द्र बने इसके लिए श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य एवं उनकी टीम सतत् प्रयासरत है और मुझे आशा है कि यह स्थल देश ही नहीं विदेशों तक आकर्षण का केन्द्र बनेगा।'

महामहिम आचार्य देवव्रत जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलनकारी नेताओं ने प्रेरणा ली और देश को स्वतंत्र कराने में अपना योगदान दिया। यहाँ तक कि श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय जैसे आन्दोलनकारी नेता भी महर्षि दयानन्द से प्रेरणा लेते थे। आज देश में विकास व भारतीय संस्कृति की विरासत की रक्षा हो रही है उसमें महर्षि द्वारा किए गए कार्यों का महत्वपूर्ण योगदान है। मेरी कामना है कि सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल के माध्यम से वैदिक संस्कृति, शिक्षा, सामाजिक उन्नति, बौद्धिक विकास जैसे अपने मिशन में सतत् प्रयासरत रहे।

इससे पूर्व श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने नवलखा महल में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा किए जा रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करते हुए बताया कि न्यास वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए निरन्तर कार्य कर रहा है। यहाँ दानदाताओं के सहयोग से दर्शक दीर्घा, मिनी थियेटर तथा सोलह संस्कारों को जीवन्त रूप में प्रदर्शित करने हेतु सोलह संस्कारों से युक्त वीथिका का निर्माण कार्य चल रहा है और निकट भविष्य में यह कार्य पूर्ण हो जायेगा।

इससे पूर्व महामहिम राज्यपाल महोदय का पुष्प गुच्छ, ओ३म् दुपट्टा एवं मेवाड़ी पगड़ी पहनाकर स्वागत किया गया।

समारोह का संचालन न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने किया तथा धन्यवाद अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने किया। इस अवसर पर न्यास के मंत्री श्री भवानी दास आर्य, कोषाध्यक्ष श्री नारायण लाल मित्तल, न्यासी श्री एस.के. माहेश्वरी, पुरोहित श्री नवनीत आर्य, जन सम्पर्क सचिव श्री विनोद कुमार राठौड़, आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर के प्रधान श्री भँवरलाल आर्य, आर्यसमाज पिछोली की प्रधाना श्रीमती मनोरमा गुप्ता व पूर्व प्रधान श्री प्रेमचन्द जी गुप्त तथा शहर के आर्यसमाज से जुड़े पदाधिकारी व सदस्यगण मौजूद थे।

- भँवर लाल गर्ग, व्यवस्थापक-न्यास

महर्षि दयानन्द द्विजन्म शताब्दी

सन् २०२४ में महर्षि दयानन्द जी महाराज का २००वाँ जन्मदिन होगा एवं २०२५ में आर्य समाज की स्थापना को १५० वर्ष पूरे हो जायेंगे। वर्तमान में प्रत्येक आर्य के जीवन में इन आयोजनों में सम्मिलित होना, अपना योगदान देना और इनके साक्षी बनना सर्वाधिक महत्व का विषय होगा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अभी से इसकी व्यापक

तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी हैं तथा देश के विभिन्न प्रान्तों से कुछ कर्मठ आर्यजनों से ऑनलाइन मीटिंगों में व्यापक विचार-विमर्श किया था। दिनांक १४ व १५ नवम्बर २०२१ को सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में एक बैठक नवलखा महल, उदयपुर में आयोजित की गई। जिसमें इन उत्सवों को लेकर दो दिन तक अत्यन्त गहन विचार-विमर्श हुआ और तीन वर्ष की व्यापक कार्ययोजना तैयार की गई। जिससे कि इस अवसर पर अभूतपूर्व आयोजन तो हो ही उसके साथ ही रचनात्मक रूप से आर्य समाज में संख्यात्मक व गुणात्मक वृद्धि के लिए अनेक प्रकल्पों की रूपरेखा तैयार की गई। जिनको कि आगे आने वाले समय में निश्चित आकार दिया जायेगा। इस बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य, महामंत्री श्री प्रकाश आर्य, उपमंत्री श्री विनय आर्य व आचार्य वाचोनिधि उपस्थित थे। बैठक के माध्यम से यह आशा प्रकट की गई कि बैठक में उपस्थित जिन आर्य सज्जनों को जो-जो जिम्मेदारियाँ दी गई हैं उनका क्रमशः विस्तार करते हुए सम्पूर्ण आर्य जगत् को इस मिशन से जोड़ा जाकर लक्ष्य प्राप्त किए जाये।

- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

हलचल

पूज्य डॉ. ब्रह्ममुनि जी गौरव समारोह

आगामी ११,१२ व १३ फरवरी २०२२ को महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम नन्दागोल मार्ग, परली बैजनाथ, जिला-बीड़ में डॉ. ब्रह्ममुनि जी गौरव समारोह का आयोजन किया जायेगा जिसके माध्यम से अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज को समर्पित कर देने वाले डॉ. ब्रह्ममुनि जी के जीवन का अनुसरण करने की प्रेरणा आर्यजन ग्रहण कर सकें। इस अवसर पर डॉ. ब्रह्ममुनि जी गौरव स्थिर वेद प्रचार निधि के नाम से ३१ लाख रु. की निधि स्थापित करने का निश्चय किया गया है। सभी आर्यजनों का सहयोग अपेक्षित है। - डॉ. नयन कुमार आचार्य, मोबाइल नं. ९४२०३३०१७८

श्री इन्द्रदेव जी पीयूष को पत्नी शोक

आर्य जगत् के ख्यातनाम उपदेशक पंडित पन्नालाल जी पीयूष के सुपुत्र श्री इन्द्रदेव जी पीयूष, जो कि स्वयं उदयपुर में निवास कर वैदिक

मिशन की यथाशक्य सेवा करने में समर्पित हैं, की धर्मपत्नी आदरणीया श्रीमती लक्ष्मी देवी जी का निधन २ नवम्बर २०२१ को हो गया। वे काफी लम्बे समय से अस्वस्थ थीं। चिकित्सालय में उनकी चिकित्सा चल रही थी। दिनांक १० नवम्बर २०२१ को विज्ञान समिति, उदयपुर में श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री के ब्रह्मत्व में शान्ति यज्ञ का आयोजन हुआ। इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य का उद्बोधन हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया। हम न्यास परिवार व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें। - भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

महर्षि दयानन्द द्विजन्म शताब्दी

आर्य विद्वानों, लेखकों, स्वाध्यायशील आर्यजनों की सेवा में निवेदन

महर्षि दयानन्द द्विजन्म शताब्दी के उपलक्ष में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, एक वृहद प्रकाशन योजना बना रही है। जिसमें ऐसी अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तकों के पुनः प्रकाशन की योजना शामिल है जो कि आज अनुपलब्ध हो हो गई हैं। इसके अतिरिक्त ऐसी पुस्तकों के प्रकाशन पर भी विचार किया जाएगा जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है, परन्तु किसी भी कारणवश उनका प्रकाशन नहीं हो पाया है। इसके अतिरिक्त भी अगर आप किसी पुस्तक के प्रकाशन को, किसी पाण्डुलिपि के प्रकाशन को महत्वपूर्ण मानते हैं, तो कृपया शीघ्रातिशीघ्र ऐसी उक्त सभी पुस्तकों का विवरण अथवा एक प्रति मुझे निम्न व्हाट्सएप नम्बर पर भेज सकते हैं। 93142 35101

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

शारदीय नवसस्येष्टि एवं ऋषि निर्वाण दिवस पर भव्य अयोजन

आर्य समाज, हिरण मगरी, उदयपुर में कार्तिक की अमावस्या को शारदीय नवसस्येष्टि एवं ऋषि निर्वाण दिवस का भव्य आयोजन किया गया। श्री इन्द्र प्रकाश आर्य के कुशल पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के मुख्य यजमान डॉ. ममता सिंह एवं डॉ. प्रशान्त सिंह थे। यज्ञोपरान्त श्रीमती सरला गुप्ता, श्रीमती राधा त्रिवेदी, श्री सुभाष कोठारी, श्री कृष्ण कुमार सोनी, तथा सुश्री भैरवी व चारवी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन सम्बन्धी भजन एवं काव्य की प्रस्तुतियाँ दीं। आचार्य वेद मित्र आर्य ने पर्व के महत्व एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला। सभा की अध्यक्षता डॉ. अमृत लाल तापड़िया ने की। संचालन आर्य समाज के मंत्री संजय शाण्डिल्य द्वारा किया गया।

दीपोत्सव के पूरे सप्ताह में यज्ञशाला एवं प्रांगण को ओ३म् फर्रियाँ एवं विद्युत रोशनी से सजाया गया।

अपने, समाज सेवा के कार्यों को आगे बढ़ाते हुए, आर्य समाज, हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए ८२५ व्यक्तियों को आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाया गया। कार्यक्रम वैद्य भवानी शंकर राजकीय आयुर्वेद औषधालय, सुन्दरवास के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. सरोज मेनारिया एवं चन्द्रकला आर्य की देखरेख में हुआ। इस कार्यक्रम में आर्य समाज के अधिकारीगण एवं समाजसेवी जन उपस्थित थे।

दिनांक ८ नवम्बर २०२१ को आर्य समाज, हिरणमरी, उदयपुर की इकाई दयानन्द कन्या विद्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन दिनांक ८ नवम्बर २०२१ को किया गया। जिसमें विद्यालय की छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया। समूह गान प्रतियोगिता में आठवीं की छात्राएँ, रंगोली में हर्षिता दर्जी प्रथम रही। आर्य समाज के नियम में कोमल वैष्णव, अर्थ सहित गायत्री मंत्र प्रस्तुति में हीरल मेघवाल, कविता में दुर्गा डोडिया, सुई धागा रेस में रिया नलवाया, तीन टांग दौड़ में टीना एवं दीक्षा गमेती, कुर्सी रेस में यमुना गमेती, मेंढक दौड़ में अलीशा शेख विजयी रहीं। विजयी छात्राओं को विद्यालय की ओर से पुरस्कार प्रदान किए गए। - भंवर लाल आर्य, प्रधान

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०७/२१ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०६/२१ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; सैनिक विहार (दिल्ली), श्रीमती सुप्रिया चावला; जालंधर (पंजाब), श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर (राज.), श्रीमती संतोष चावला; गाजीपुर (दिल्ली), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरि.), श्री फूलचन्द यादव; गाजियाबाद (उ.प्र.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरि.), श्री आर.सी. आर्य; कोटा (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.), ज्योति कुमारी; महेन्द्रगढ़ (हरि.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 19 पर अवश्य पढ़ें।

सत्यार्थ-पीयूष

वेद ज्ञान की आवश्यकता

नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता

परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहतायामन्धोऽअच्छेतः।
सविता सन्यां विश्वकर्मा दीक्षायां पूषा सोमक्रयण्याम्॥

- यजु. ८/५४

यदि ईश्वर वेद विद्या के द्वारा अपने, जीवों के और जगत् के गुण-कर्म, स्वभावों को प्रकाशित न करे, तो किसी भी मनुष्य को विद्या और इनका ज्ञान (प्राप्त) न हो सके। और इनके बिना निरन्तर सुख कहाँ से हो सकता है।

इसी बात को महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं- जैसे जंगली मनुष्य सृष्टि को देखकर भी विद्वान् नहीं होते और जब उनको कोई शिक्षक मिल जावे तो विद्वान् हो जाते हैं और अब भी किसी से पढ़े बिना कोई विद्वान् नहीं होता। इसी प्रकार जो परमात्मा उन आदि सृष्टि नियमों को वेद विद्या द्वारा न पढ़ाता और वे अन्यों को न पढ़ाते तो सब लोग अविद्वान् ही रह जाते।'

नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता

.....व्यापक (ईश्वर) अथवा विद्वानों के बिना कोई भी यथार्थ विद्या को तथा कारण से कार्यरूप समस्त लोकों को रचने, धारण करने और उनका ज्ञान कराने में समर्थ नहीं हो सकता है।' **- ऋ. १/३१/२ के महर्षि दयानन्द कृत भाष्य से।**

नैमित्तिक ज्ञान के बिना मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि नहीं हो सकती। आप मानव शिशु को एकान्त में पालिये, उसे कुछ भी नहीं आवेगा। इस समस्या को लेकर अनेक प्रयोग भी किए गये हैं। असीरिया के राजा असुर वनीपाल, यूनान के राजा सेमेटिकल, सम्राट फ्रेडरिक द्वितीय, स्कॉटलैण्ड के जेम्स चतुर्थ एवं भारत के अकबर बादशाह ने मनुष्य के बच्चों को मनुष्य से सर्वथा अलग रखा। भोजनादि भी इस प्रकार दिया गया कि मनुष्य उनके सामने न आये। जब वे बड़े हुए तो आकृति में मनुष्य अवश्य थे परन्तु उनकी प्रत्येक भंगिमा वन्य पशुओं के समान ही थी। वे मानवी भाषा न सीख सके। इसके विपरीत आप कोयलादि पक्षियों के बच्चों को पृथक् बड़ा कीजिए। वे अपनी जाति के अनुरूप बोली ही बोलेंगे, आवाजें निकालेंगे।

एक ऐसी भैंस अथवा गाय जो जिन्दगी भर रेगिस्तान में रही हो, के नवजात शिशु को आप गहरे पानी में डाल दीजिए वह तैरकर पार हो जावेगा। जबकि नदी किनारे रहने वाले मल्लाह का बच्चा अगर तैरना नहीं सीखेगा तो कभी नहीं तैर पावेगा। आप बया को घोंसला बनाते देखें, मधुमक्खी के छत्ते को देखें। उच्चतम कोटि की यह कारीगरी प्रभु प्रदत्त है, उनका स्वाभाविक ज्ञान है।

मनुष्य अभियान्त्रिकी की पढ़ाई पढ़े बिना साधारण निर्माण भी नहीं कर सकता।

निष्कर्ष यह कि नैमित्तिक ज्ञान के बिना मनुष्य शून्य है। यह ज्ञान प्रत्येक पीढ़ी को पूर्वज पीढ़ी से प्राप्त होता रहता है। पर प्रश्न उपस्थित होता है कि आदि सृष्टि की प्रथम मानव पीढ़ी को ज्ञान किसने दिया? इसका इसके अतिरिक्त कोई उत्तर नहीं है कि यह नैमित्तिक ज्ञान उस गुरुओं के गुरु परमपिता परमात्मा ने दिया। यही वेद ज्ञान है।

वेद ज्ञान प्रदान करने का द्वितीय हेतु- हम और आप देखते हैं कि जब कोई निर्माता कम्पनी कोई यंत्र बनाती है तो साथ में उसे उपयोग करने, उससे यथावत् काम लेने की विधि तथा कोई खराबी आ जाने पर उसे ठीक करने की विधि भी प्रकाशित करती है। इसके अभाव में यंत्र के होते हुए भी हम उससे लाभ न ले पावेंगे और उल्टा सीधा प्रयास करेंगे तो बहुत सम्भव है कि यंत्र को अथवा अपने को हानि पहुँचा लेंगे। ठीक इसी प्रकार मनुष्य को उत्पन्न करने से पूर्व परमपिता परमात्मा ने यह सृष्टि तथा समस्त भोग्य पदार्थ उत्पन्न किए। सृष्टि में सुखपूर्वक जीवन यापन करते हुए सर्वतोमुखी उन्नति मनुष्य कर सके इसके लिए आवश्यक है कि सृष्टि का निर्माता प्रभु ही जीने के प्रकार के बारे में, अन्य प्राणियों से सहअस्तित्व स्थापित करने के बारे में, सृष्टिगत् पदार्थों का नानाविध उपयोग कर मानवता का कल्याण करने के बारे में और इसी के साथ जीवन के अन्तिम लक्ष्य तथा उसकी प्राप्ति के प्रकार के बारे में उपदेश करे। और दयालु प्रभु ने ऐसा किया। सृष्टि के आदि में दिए गए इस उपदेश को ही वेद संज्ञा के नाम से जाना जाता है।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

□□□

HOT HAI BOSS
Dollar
ULTRA™
THERMALS

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 December-2021 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

स्त्री पुरुष के रज-वीर्य्य के संयोग से मनुष्य तो बनते ही हैं, परन्तु परमेश्वर की सृष्टिक्रम के विरुद्ध पशु-पक्षी सर्प्प आदि कभी उत्पन्न नहीं हो सकते। और हाथी, ऊँट, सिंह, कुत्ता, गधा और वृक्षादि का स्त्री के गर्भाशय में स्थित होने का अवकाश कहाँ हो सकता है?

- सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास पृष्ठ ३३०

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर 313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर